ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

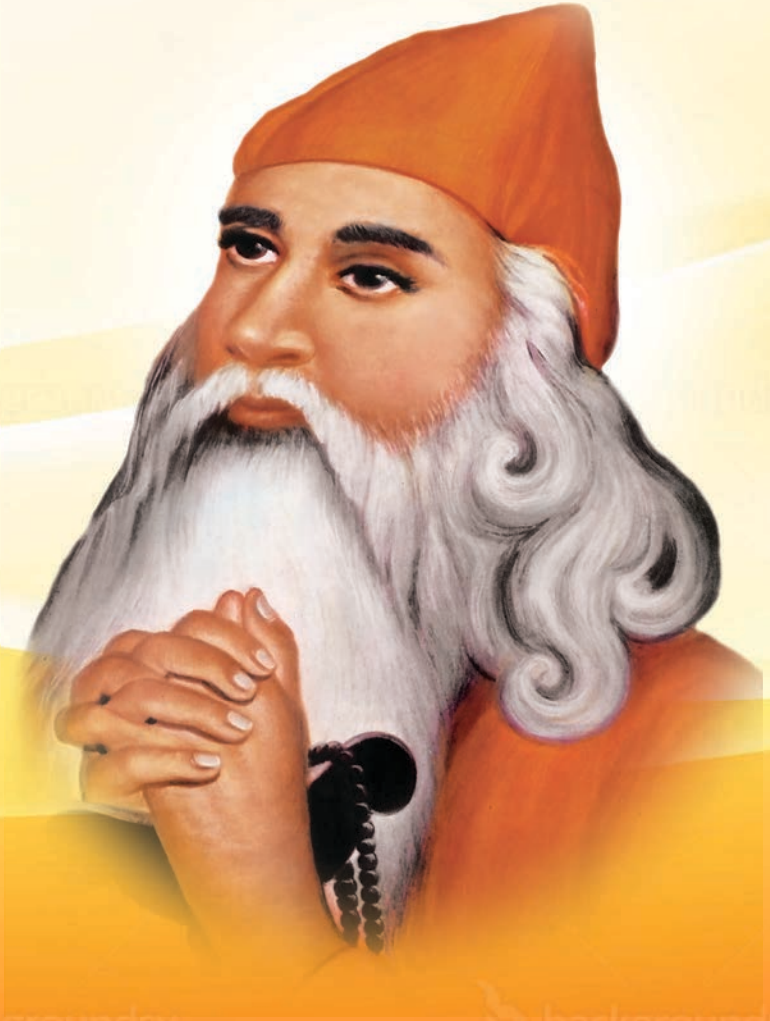

वर्षः 67 अंकः 2 फरवरी 2016

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक :
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक:
प्रमोद कुमार ऐचरा

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
info@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक सदस्यता : ₹ 70
आजीवन सदस्यता : ₹ 700

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबदवाणी	3
सम्पादकीय	5
साखी	6
भगवत्तत्त्व मीमांसा और गुरु जाम्भोजी	8
जांभाणी रचनाकार संत श्रीपरमानन्दजी बणियाल	11
गुरु जम्भेश्वर और अवतार : 'सबदवाणी' के परिप्रेक्ष्य में	15
सुखमय जीवन का रहस्य है - यज्ञ	17
भक्तिकाल की संत परम्परा और गुरु जाम्भोजी	18
बधाई सन्देश	19
मां की ममता	20
जांभाणी हरजस	21
लोक साहित्य - बिश्नोई लोकगीत पीळो, अजवाण	22
पर्यावरण रक्षन्तु - पर्यावरण: स्वरूप व परिणाम	23
साचा बिश्नोई मिळेळा, भजन-गुरुवर	24
स्वस्थ रहो - सर्दियों में स्वस्थ रहने के घरेलू उपाय	25
कैरियर : प्रतिभा का विस्तार-सफलता का आधार	27
व्रत (उपवास) की महत्ता	28
बाल कविताएं	29
जांभाणी प्रश्नोत्तरी-2	30
विविधा : हिंगोली काण्ड (एकांकी नाटक)	31
जम्भवाणी में प्रतिपादित प्रमुख शब्दों की शास्त्रीय समीक्षा	34
पुस्तक समीक्षा-वृक्षों के लिए बलिदान का दस्तावेज	37
सामाजिक हलचल	38

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद 49-50

"दोहा"

जोगी सतगुरु यूं कहै, वाता तणा विवेक।
सतगुरु हमने भेटियों, दर्शन किया अलेख।

वह जोगी दूत बनकर आया था, कहने लगा-हे महाराज! वे हमारे लक्ष्मण नाथ तो बड़े विवेकी है। उन्होंने हमें ज्ञान बताया है। इसलिये हमने सतगुरु परमात्मा का दर्शन कर लिया है। तब गुरु जाम्भोजी ने सबद द्वारा इस प्रकार से बतलाया।

सबद-49

ओ३म् अबधू अजरा जारले, अमरा राखले, राखले बिन्द की धारणा।
पताल का पानी आकाश को चढ़ायले, भेंट ले गुरु का दरशणा।

भावार्थ- हे अवधू! जो तुम्हें नित्य प्रति जलाने वाला काम, क्रोध, मोह, राग-द्वेष आदि ये तुम्हारे अब तक जले नहीं है। समाप्त नहीं हुए है। अब इनको तूं जला दे। भस्म कर दे। तब तुम्हारा अन्त:करण पवित्र होगा। अमरा राखले अर्थात् दया, प्रेम , करुणा, नम्रता, शील आदि सद्गुणों को धारण कर ले। इनको सदा ही अमर रख ले। कभी भी इनसे विछोह न हो। इतना रखने के पश्चात् योगी की मुख्य अमूल्य वस्तु है ब्रह्मचर्य की रक्षा करना वह भी यत्न करके अर्थात् ऊर्ध्वरत ब्रह्मचारी हो जा।

ब्रह्मचर्य सदा ही नीचे की ओर बहता है, यह तो इसका स्वभाव है तथा इनका स्थान भी नीचे ही है। इसे सहस्रार ऊर्ध्व की ओर चढ़ाने का प्रयत्न करें। इस ऊर्जा शक्ति का अपव्यय रोककर इसे परमात्मा के दर्शन में सहायक बना अथवा ये तुम्हारी वृत्तियां है ये सदा ही नीचे विषयों की तरफ भटकती है इन्हें इन विषयों से ऊपर उठाकर परमात्मा की तरफ स्थिर करेगा तो सद्गुरु परमात्मा का दर्शन स्वत: ही हो जायेगा। योगी के लिये तो परमात्मा का दर्शन करना ही प्रथम कर्त्तव्य है।

****

जोगी कहै सुण देवजी, बाला लक्ष्मण योग अपार।
मुख नहीं देखे त्रियां को, बचै नेक प्रकार।
शान्त चित आई तवै, विषय निवारै सोय।
अब विषय धारण करै, जोग भ्रष्ट सो होय।

वह योगी फिर कहने लगा-हे देव! बाल योगी लक्ष्मण नाथ का तो योग अपार है। वह तो स्त्री का मुख भी नहीं देखता तथा अनेक प्रकार से बचने की कोशिश करता है क्योंकि जब तक विषयों का निवारण नहीं करेगा तब तक योगी का चित शान्त नहीं हो सकता और यदि विषयों की तरफ योगी की दृष्टि चली जाये तो उसका योग भ्रष्ट हो जाता है। इसलिये नाथजी बड़ी ही सावधानी से रहते हैं। इस वार्ता को श्रवण करके उनके प्रति सबद सुनाया।

सबद-50

ओ३म् तइयां सासूं तइया मासूं, तइया देह दमोई।
उतम मध्यम क्यूं जाणिजै, बिबरस देखो लोई।

भावार्थ- जब तक योगी की दृष्टि में स्त्री-पुरुष का भेदभाव विद्यमान रहेगा तब तक वह सच्चा योगी सफल योगी नहीं हो सकता। जब तक सर्वत्र एक ज्योति का ही दर्शन करेगा तो फिर भेद दृष्टि कैसी? और यदि भेद दृष्टि बनी हुई है तो फिर वह योगी कैसा। इसलिये कहा है कि जो श्वास एक पुरुष में चलता है वही स्त्री में भी चलता है तथा जो मांस एक पुरुष के शरीर में है वही स्त्री में भी है और यह पंचभौतिक देह स्त्री पुरुष दोनों की बराबर है तथा जीवात्मा में भी कोई भेद नहीं है। परमात्मा का अंश प्रतिबिम्ब रूप जीव भी सभी का एक ही है तो फिर अपने को योगी कहते हुऐ भी उत्तम और मध्यम क्यों जानता है। स्त्री को मध्यम अदर्शनीय क्यों कहता है? हे लोगों! अब आप ही विचार करके देखिये।

जाकै बाद विराम बिरासों, सरसा भेला चालै, ताकै भीतर छोत लकोई।

यह भेद दृष्टि क्यों है? क्योंकि जिस योगी को अब तक व्यर्थ के विवाद द्वारा विजय की लालसा, साधना रहित, निष्क्रिय जीवन जीते हुए विषयों में रमण, अपनी प्रसिद्धि और धन के लिये योग का झूठा दिखावा या नाटक करना

तथा संशय की निवृत्ति न होना, प्रत्येक विषय में ही रस लेना इत्यादि भूलों में ही जीवन व्यतीत होगा तो उसके भीतर यह भेदभाव, छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष छोत अन्दर छुपी हुई रहेगी इस भेद दृष्टि को मिटा नहीं सकता। इसलिए समान दृष्टि के लिए इन ऊपर के एक एक दोषों को बाहर निकालना ही होगा।

जाकै बाद विराम बिरासों सांसो, सरसा भोलो भागो, ताकै मूले छोत न होई।

और जिस सच्चे योगी के बाद विराम, विरासों, संशय, सरसपना तथा यह भोलापन मिट जाता है उसके मूल में कभी छोत भेदभाव दृष्टि नहीं हो सकती। तुम्हारे लक्ष्मणनाथ की भेद दृष्टि अब तक निवृत्त नहीं हुई है इसलिये पूर्ण योगी भी नहीं है।

दिल दिल आप खुदायबन्द जाग्यो, सब दिल जाग्यो सोई। जो जिंदो हज काबै जाग्यो, थल सिर जाग्यो सोई।

इस समय प्रत्येक दिल रूपी ह्रदय में वह सोई हुई जीवात्मा जागृत हो गई है उनके सुषुप्त संस्कारों को जागृत कर दिया जाता है तथा उन सोई हुई जीवात्माओं के रूप में वह स्वयं परमेश्वर ही था और अब जागृत होने वाला भी वही परमात्मा ही है। अब ये लोग परमात्मा के समीपस्थ होने से सचेत हो चुके हैं। इन्हें आप ठग नहीं सकते तथा जो महापुरुष कभी हज काबै में जागृत हुआ था, परमात्मा से साक्षात्कार किया था, वही परमात्मा जागृत होने वाला अब यहां सम्भराथल पर जगाने आया है। इसलिये यह सम्भराथल पर स्थित पुरुष स्वयं जागृत है तथा अनेकानेक लोगों को जागृत किया है।

नाम विष्णु के मुसकल घातै, ते काफर सैतानी।

विष्णु नाम जपने वालों को जो अड़चन पैदा करता है वे या तो काफिर-नास्तिक है या फिर जोर जबरदस्ती करने वाले शैतान है, ऐसे लोगों से बचकर रहना ही श्रेष्ठ है।

हिन्दू होय कर तीरथ धोकै, पिण्ड भरावै तेपण रह्या इवाणी। जोगी होय के मूंड मुंडावै, कान चिरावै, गोरख हटड़ी धोकै। तेपण रह्या इवाणी, तुरकी होय हज काबो धोकै, भूला मुसलमानों।

हिन्दू होकर भी जो घर बैठा-बैठा ही तीर्थों को धोक लगाता है अर्थात् प्रणाम कर लेता है तथा गयाजी में जाकर मृत्यु के पश्चात् परिवार के लोग पिण्ड दान करते हैं उस मृतात्मा को स्वर्ग में भेजना चाहते हैं। ऐसे पाखण्ड में रत होकर फिर भी अपने को हिन्दू कहते हो। ऐसे हिन्दू बनने से कोई लाभ नहीं है। वे तो खाली ही रह गये। न तो घर में बैठे हुए तीर्थों की धोक लगाने से लाभ होगा और न ही पिण्ड भराने से ही मुक्ति मिल सकेगी। हिन्दू का कर्त्तव्य यहीं पर ही समाप्त नहीं हो जाता। योगी होकर भी सिर मुंडा लेते हैं, कान चिरवा करके मुद्रा डाल लेते हैं और कोई योगिक साधना तो करते नहीं किन्तु गोरखनाथ जी के धूंणें पर ही जाकर पूजा-प्रणाम कर लेते हैं। ऐसे योगी भी भूल में ही है जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। उसी तरह मुसलमान भी हज काबै की धोक लगा लेते हैं। इन तीनों की न तो तीर्थ, गोरख हटड़ी और काबै की हज रक्षा करती। यदि ये ऐसे समझते हैं तो भारी भूल में है।

के के पुरुष अवर जागैला, थल जाग्यो निज बाणी। जिहिं के नादे वेदे शीले शब्दे, लक्षणें अन्त न पारूं। अंजन मांही निरंजन आछै, सो गुरु लक्ष्मण कंवारूं।

इस धरती पर कई तरह के और भी पुरुष जागेंगे। उनका जागृत होने का अपना एक भिन्न ही तरीका होगा वह तो भविष्य ही बतायेगा। यह जागृत होने की धारा सदा ही चली आई है। उसी प्रवाह में ही इस सम्भराथल पर अपनी सबदवाणी के सहित गुरु जाम्भोजी कहते है कि मैं आया हूँ। अन्य अवतारी पुरुषों में तो कोई एक विशेषता रही होगी किन्तु इस समय सम्भराथल पुरुष के तो इस वाणी में विशेषत: अनहद नाद विद्या का बखान, वेद के विस्तृत ज्ञान की चर्चा शीलता, नम्रता आदि गुणों का, नाद विद्या का बखान इत्यादि सुन्दर लक्षणों का अन्त पार ही नहीं है तथा जैसा भी मैं शब्दों द्वारा बखान करता हूँ। वह मेरा अपना निजि अनुभव ही है।

प्रथम तो मैं किसी बात को अनुभव रूपी तराजू से तोलता हूँ, फिर दूसरों को कहता हूँ। मुझे इन गुणों को धारण करने में कोई कठिनाई भी नहीं होती क्योंकि इस शरीर रूपी अंजन माया में ही वह निरंजन माया रहित ज्योति ही प्रकाशित है इसलिये मैं ही वही लक्ष्मण कुमार हूँ जो विष्णु के अंश रूप से अवतार प्रसिद्ध है तथा हे आयस्! इन सद्गुणों से विभूषित ही लक्ष्मण कुमार हो सकता है।

साभार- जंभसागर

सम्पादकीय

जांभाणी मेलेः श्रद्धा व संस्कृति के संगम

मेले जांभाणी संस्कृति ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। यदि इन्हें संस्कृति के पोषक, परिमार्जक और संवाहक कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा। पारस्परिक मेल-जोल, धार्मिक और सांस्कृतिक समझ के लिए तो ये मेले सुनहरे अवसर होते हैं। यदि सामाजिक संगठन की दृष्टि से देखा जाए तो मेले सर्वोत्तम माध्यम होते हैं। कहने का अभिप्राय है कि मेले कोई सैर-सपाटे करने के लिए नहीं होते बल्कि इनका उद्देश्य अत्यन्त गहन व बहुमुखी है। बिश्नोई समाज व संस्कृति में मेलों को अत्यन्त ही महत्व दिया गया है। हमारे समाज में यह परम्परा अत्यन्त ही प्राचीन भी है। गुरु महाराज के वैकुण्ठगमन के पश्चात् ही मुकाम का फाल्गुनी मेला प्रारम्भ हो गया था। थोड़े समय बाद वील्हो जी ने मुकाम का आसोजी मेला व जांभोलाव के मेले प्रारम्भ किए। अब तो यह परम्परा बहुत आगे बढ़ गई है। जन्माष्टमी, धर्म स्थापना दिवस, निर्वाण दिवस, खेजड़ली शहीदों मेले के साथ-साथ हर अमावस्या पर स्थान-स्थान पर मेले भरने लगे हैं, परन्तु सबसे विशाल मेले मुक्तिधाम मुकाम में फाल्गुनी और आसोज की अमावस्य को लगने वाले मेले ही हैं जिसमें पूरे भारतवर्ष से लाखों की संख्या में लोग पहुंचते हैं।

निश्चित रूप से मेलों की संख्या के साथ-साथ मेलों में जाने वालों की संख्या भी बढ़ी है। आज प्रचार-प्रसार, यातायात और सुख-सुविधाओं में वृद्धि हुई है जिसका प्रभाव इन मेलों पर भी पड़ा है। परन्तु चिन्ता का विषय यह है कि श्रद्धालु बढ़ रहे हैं परन्तु उस अनुपात में श्रद्धा नहीं बढ़ रही है। मेले में जाने वाले श्रद्धालु इन मेलों में निहित गहन उद्देश्यों से अनभिज्ञ होते हैं। इसलिए ये मेले मात्र औपाचारिकता बनने लगे हैं। आज समाज में जो दिखावे का दौर चला है। उसका प्रभाव इन मेलों पर भी पड़ रहा है जबकि श्रद्धास्थल किसी आत्मप्रदर्शन का नहीं अपितु आत्मावलोकन का स्थान होता है।

आत्मानुशासन किसी भी मेला व्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है परन्तु पिछले कुछ समय से हमारे इनमें से यह लुप्त होता दिखाई दे रहा है। और तो और यज्ञ में आहुति देते समय भी हम संयम व धैर्य नहीं रखते। एक-दूसरे के ऊपर से घी नारियल को फैंक-फैंक कर यज्ञ में डालते हैं। भगवान का ऐसा अपमान शायद ही कहीं और दिखाई दे। इससे एक-दूसरे के कपड़े भी खराब करते हैं। मेले में हम किसी तरह घी-नारियल को यज्ञ की ज्वाला तक पहुंचाना ही अपना कर्त्तव्य मानते हें उसके पश्चात् पूरा दिन इधर-उधर की बातें करते हैं, धार्मिक-सामाजिक चर्चा व कार्यक्रमों में आज किसकी रूचि है?

कुछ इसी तरह के अधैर्य और असंयम का परिचय हम भंडारे व विभिन्न संगठनों के कार्यक्रमों में देते हैं जो गहन चिन्ता का विषय है। यदि समय रहते हमने इन सब बातों को गंभीरता से नहीं लिया तो हमारे इन मेलों का मूल स्वरूप विकृत हो जाएगा और इनकी सार्थकता पर भी प्रश्न चिह्न लग जाएगा। आओ हम इसी फाल्गुन मेले से संकल्प लें कि मेले में हम उसी भावना से जाएंगे जिस भावना से हमारे पूर्वजों ने इन्हें प्रारम्भ किया था।

साखी

साखी छन्दां की राग सोरठ

जुग मां जलम लियो मेरा जीयो, वसियो आय बसेरो।
कामण कोड करे मेरा जीयो, जम दल देला फेरो।
जमदल फेरो आण घेरयो, पुन री पाज बंधाइये।
नाम नाली ज्ञान गोली, धरम बांण चलाइये।
भरम भागो जोत जागी, कोल सतगुरु सूं कियो।
लाछ लछमी नांव तेरे, जीव जुग मां जलम लियो।1।
गोवलवास वस्यो मेरा जीयो, सुकरत करो कमाई।
कुटुम्ब कोड करे मेरा जीयो, बाजै बिड़द बधाई।
हुवै बधाई मंगल गावै, हरष मन आनन्द घणों।
भाट ब्राह्मण बिड़द बोलै, हुयो कुल मां चांदणों।
सुरगे सुख अनन्त इधक, साध संगति रलि मिलै।
साच शील संभाल रे जीव, वास वसियो गोवले।2।
पापा प्रीत तजौ मेरा जीयो, किरिया करौ कमाई।
जम की भीड़ पड़ै मेरा जीयो, तां दिन विसन सहाई।
विसन सहाई होय भाई, औघट घाट लंघावही।
जीव काजै दान दीजै, अंत आडो आवही।
आण को अपराध मेटो, जीव घात मत को करो।
दया विहुणां जांही दोजख, प्रीत पाप पर हरो।3।
संता री सेवा करो मेरा जीयो, भजन करो गुरु भाई।
उर मां ध्यान धरो मेरा जीयो, जाय मिलो सुरराई।
सुरराय मेलो हुवै जां दिन, हरख मन कांमण करै।
सिद्ध साध कुशल पूछै, वेद ब्रह्मा उच्चरै।
उपकार सार विचार रे जीव, जांण मन क्यों विसरो।
भजन भक्तां भेद लाभे, सेवा सतगुरु की करो।4।

भावार्थ–हे जीव! तुमनें इस जगत में आकर मानव शरीर धारण किया है और यहां पर रहने के लिये महल मकान आदि का साधन जुटा लिया है ऐसा लगता है कि यह वास सदा के लिये किया जा रहा है। इस घर में रह कर अनेक कामनाओं तथा वासनाओं में फंस गया है आगे पीछे कुछ भी नहीं सोचा है यह विचार नहीं किया कि यम दूतों नें भी घेरा डाल रखा है, न जाने कब कहां से उठाकर ले जायेंगे। हे प्राणी! यह निश्चित ही है कि काल के दूतों ने आकर घेरा डाल दिया है इसलिये समय रहते हुए पुण्य की पाल बांधनी चाहिये। यह पाल ही रक्षा कर सकेगी। यमदूतों को भगाने के लिये परमात्मा विष्णु के नाम रूपी बन्दूक की नाली से ज्ञान रूपी गोला अवश्य ही चलाइये। यही धर्म के बाण जाकर आगे लक्ष्य का छेदन करेंगे तथा ज्ञान रूपी गोली से नाना प्रकार का भ्रम मिट जायेगा और परमात्मा की ज्योति जागृत हो जायेगी। सतगुरु से किये हुए वचनों को इस प्रकार से निभाया जा सकता है तथा सम्पूर्ण विश्व की धन सम्पति तुझे स्वयं ही मिल जायेगी। इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिये ही तो इस संसार में जन्म लिया है।1।

हे जीव! इस संसार में आकर गोवलवास की तरह रहना सीख, इस जगत को अपना सच्चा घर नहीं समझ,

इसी भाव से रहेगा तो शुभ कार्य हो सकेगा अन्यथा मोह माया में फंस जायेगा। जब बालक संसार में आता है तो सभी कुटुम्बी जन प्रेम करते है, बधाईयां बांटते है, मंगल गीत गाते है, नृत्य करते है अनेक प्रकार की खुशियां प्रगट करते है, भाट ब्राह्मण आकर बिड़द गान करते है। यही बड़ाई करते हुए कहते है कि यह बालक तो तुम्हारे कुल का दीपक है इसके आने से प्रकाश हो गया है। इसी खुशी पर साधु सज्जन भी आकर मिलते है और स्वर्ग से भी बढ़कर सुख को देखते है किन्तु हे जीव! ये सभी कुछ दिखावा मात्र है, सच्चा सुख तथा अलंकार तो सत्य एवं शील ही है। इसलिये इसे ही संभालकर गोवलवास की भांति जीवन व्यतीत करें।2।

हे मेरे जीव! पापों से प्रीत छोड़कर शुभ क्रिया आचार विचार पर ध्यान दे। शुभ कमाई ही करें। जब यमदूतों की मार पड़ेगी तब एक मात्र विष्णु ही सहायता करनें वाले होंगे या विष्णु द्वारा बताया हुआ मार्ग सिद्धान्त। वह विष्णु ही तुम्हें दुर्गम बिहड़, जंगल से पार निकाल सकते है। इसलिये विष्णु की शरण ग्रहण अवश्य ही करें। जीव की भलाई के लिये सदा श्रद्धा सामर्थ्यानुसार दान देते रहना क्योंकि हाथ से सुपात्र को दिया हुआ दान भी परलोक में सहायक होगा दुर्गति से बचायेगा। आन देवता जैसे-खेचर, भूचर, चौसठ प्रकार की योगिनी, बावन भैरूं आदि की पूजा मत करो और न ही किसी जीव की हत्या ही करो। इस प्रकार से जीव दया हीन नर तो निश्चित ही दौरे नरक में पड़ेंगे। इसलिये हे प्राणियों! पापों से प्रीत का परिहार करो।3।

आगे कर्त्तव्य कर्म बतलाते हुए कहते है कि संत सज्जन पुरूषों की सेवा करो और विष्णु का भजन करो। हे गुरु भाइयों! क्योंकि गुरु जाम्भोजी ने विष्णु का ही जप करना बतलाया है। सदा ही धर्म में ही ध्यान रखो हमारा जो भी कार्य बनें वह धार्मिक ही होना चाहिये। इससे आप स्वयं ही देवाधिदेव भगवान विष्णु से अवश्य ही जाकर मिल जाओगे। जिस दिन भी आपकी परमात्मा से भेंट हो जायेगी उसी दिन मन प्रसन्न हो जायेगा। आपका वहां पर भव्य सत्कार होगा, सिद्ध साधुजन आकर कुशल समाचार पूछेंगे, ब्रह्माजी वेद का उच्चारण करेंगे। हे जीव! परोपकार के सार को समझ और इसी पर जीवन लगा दें। क्यों भूल जाता है कि गुरुदेव नें यही तो बतलाया है। भजन से ही भक्तों की पहचान होती है अथवा जो भजन सेवा करता है वही तो सच्चे अर्थों में भक्त कहलाता है। भक्त ही भगवान का अत्यन्त प्रिय जीव है।4।

साभार - साखी भावार्थ प्रकाश

श्री लादूराम बिश्नोई बने संसदीय सचिव

प्रसिद्ध समाजसेवी भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री लादूराम बिश्नोई को राजस्थान सरकार में संसदीय सचिव (राज्यमंत्री दर्जा) बनाया गया है। श्री बिश्नोई ने 2013 में सम्पन्न राजस्थान विधान सभा चुनाव में गुडामालानी विधान सभा क्षेत्र से विजय प्राप्त कर विधानसभा में पदार्पण किया था।

श्री लादूराम जी को समाज सेवा की घुट्टी बचपन से ही मिली थी। आपके पिता जी एक प्रसिद्ध समाजसेवी थे। उन्होंने जालौर क्षेत्र में मृत्युभोज बन्द करवाने को लेकर विशेष आन्दोलन चलाया था। आपने भी अपने पिताजी के पदचिह्नों पर चलते हुए नागौर, बाड़मेर व जालौर आदि जिलों में कई स्थानों पर धर्मशालाओं, छात्रावासों व मन्दिरों का निर्माण करवाया था। निज मन्दिर मुक्ति धाम मुकाम के जीर्णोद्धार में आपने विशेष सहयोग प्रदान किया था जिसके लिए आपको समाज द्वारा सम्मानित भी किया गया था। आपकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 1985 में पंचसदी समारोह में मुक्ति धाम मुकाम में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा आपको सम्मानित किया गया था। आप द्वारा की गई समाजसेवा को ध्यान में रखते हुए अक्तूबर 2005 में आपको अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा का उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया था। सेवानिवृत्ति के पश्चात आपको मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे जी द्वारा 1 जून, 2004 को आपको सलाहकार (मोनिटरिंग-राज्यमंत्री) मुख्यमंत्री सचिवालय नियुक्त किया था।

आपकी इस उल्लेखनीय सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई व गुरु महाराज से प्रार्थना कि आप दिन दुगनी, रात चौगुनी उन्नति करें और इसी तरह समाजसेवा करते रहें।

भगवत्तत्त्व मीमांसा और गुरु जाम्भो जी

लौकिक रूप में 'भगवत्तत्त्व' शब्द भगवान् की सत्ता और स्वरूप का बोधक है। भगवान् की सत्ता और स्वरूप अनादि काल से ही मनुष्य की जिज्ञासा और चर्चा का विषय रहा है। सामान्यत: अलौकिक ऐश्वर्य सम्पन्न होते हुए भी वे अनन्त ऐश्वर्यों से युक्त है, जिनके चमत्कार मात्र से प्रभावित होकर आस्तिकजन भगवान् की महत्ता के समक्ष नतमस्तक होकर उनके स्वरूप के जिज्ञासु होते हैं, वह भी ऐसे स्वरूप के प्रति जिसका साक्षात्कार नेत्रन्द्रिय से असंभव है। बाह्य जगत में रूप का साक्षात्कार नयन गोचर भले ही हो फिर भी अनादिकाल से 'भगवत्तत्त्व' को जानने की प्रक्रिया किसी न किसी रूप में अद्यावधि चली आ रही है।

यदि हम 'भगवत्तत्त्व' शब्द के यौगिक अर्थ पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि यह दो शब्दों का मेल है- 1. भगवत् 2. तत्त्व। पहले यहाँ इन शब्दों पर पृथक्-पृथक् विचार आवश्यक है। प्रकृत सन्दर्भ में 'भग' शब्द छ: प्रकार के महनीय गुणों का बोधक है, जिसमें अगणित ऐश्वर्य, पराक्रम, यश, समृद्धि, ज्ञान और वैराग्य समाकलित है-

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशसः श्रियः।
ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा॥[1]

व्याकरण के अनुसार भी इन छ: महनीय गुणों का नित्ययोग जिसमें हो वह 'भगवान्' है- भग+मतुप-भगवत्।[2] किन्तु पुराणों में 'व' शब्द निवासार्थक माना गया है जिसके अनुसार परमात्मा में सब प्राणियों की उपस्थिति परिकल्पित की गई है। जगद्रूप में वे ही प्राणियों के आधार है-

वसन्ति यत्र भूतानि भूतात्मन्यखिलात्मनि।
स च भूतेष्वशेषेषु वकारार्थस्ततोऽव्ययः॥[3]

इसका अभिप्राय: यह हुआ कि अखिल ब्रह्माण्डनायक भगवत्पदवाच्य है, वे ही जगत के सृष्टा, पालक और हर्त्ता भी हैं-

उत्पतिं प्रलयं चैव भूतानामागति गतिम्।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति॥[4]

'तत्त्व' शब्द का यौगिक अर्थ अनेकात्मक होते हुए भी मुख्यत: स्वरूपावस्था का परिचायक अधिक है। तत्त्व- तत्+त्व, जिसका अर्थ है- यथार्थतता, वास्तविक स्थिति या स्वरूप, सार वस्तु, चेतन वस्तु आदि।[5]

किसी के स्वरूप या अवस्था को ठीक-ठीक जानना एक बड़ा कठिन कार्य है, उसमें यदि विषय भगवत्स्वरूप का हो तो कार्य अत्यन्त दुस्तर हो जाता है। कोई विरले ही उसके स्वरूप को जानने में सफल हुए हैं। जो सफल हुए हैं वे भी उसके स्वरूप का निर्वचन नहीं कर सके हैं, केवल अनुपयुक्त का निषेध करते हुए- 'अभाव' से 'भाव' की ओर संकेत करने में ही वे साधक कृतकृत्य हो गये-

स एष नेति नेति आत्मा, नह्येतस्मात् अन्यत् परमस्ति।[6]

यही कारण है कि ऋषियों ने 'भगवत्तत्त्व' को भावनागम्य बताकर भवबन्धन से छुटकारा पाने को कहा है-

भजस्व भावेन विभुं भगवन्तं ब्रजेश्वरम्।
ततो भागवतो भूत्वा भवबन्धात् प्रमोक्ष्यासि॥[7]

दुर्बोध होने पर भी भारतीय चिन्तन परम्परा में 'भगवत्तत्त्व' पर पर्याप्त मनन हुआ है। भगवत् चिन्तन एक परम्परा के रूप में प्राप्त होता है। जिसका क्रमश: विवेचन करने पर ही हम किसी निष्कर्ष तक पहुंच सकते हैं-

वेदों में भगवत्तत्त्व

वेद भारतीय संस्कृति के मूलाधार हैं। उन्हें सम्पूर्ण धर्म का मूल माना गया है- 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'। वेदों में 'भगवत्तत्त्व' को परमात्मा, ब्रह्म आदि नामों से व्यक्त किया गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि जब आकाश, धरती, पानी, स्वर्ग-नरकादि कुछ भी नहीं था, तब भी उस परमात्मा की उपस्थिति थी-

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं, नासीद्रजो नो व्योम परो यत्।
किमावरीवः कुहकस्य शर्मन्, अम्भः किमासीद् गहनं गम्भीरम्॥[8]

जब मृत्यु-अमरता, दिवस-रात, जड़-चेतन कुछ नहीं था उस समय भी ब्रह्म अपनी माया के साथ विराजमान थे-

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि, न रात्र्या अह्न आसीत प्रकेतः।
आनीदवार्त स्वधया तदेकं, तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास॥[9]

इस सृष्टि का विकास भी उसी परमात्मा से हुआ है और वही इसे धारण करता है-

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव, यदि वा दधे यदि वा न।

यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमनत्सो, अंग वेद यदि वा न वेद ॥[10]

अथर्ववेद के अनुसार श्री भगवान् स्वयंभू, सदातृप्त, सर्वत्र व्याप्त, अकाम, अजर और अमर हैं। उन्हें जान लेने से मृत्यु का भय नहीं रहता है–

अकामो धारो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः।
तमेव विद्वान न विभाय मृत्योऽत्मानं जरमजरं युवानम् ॥[11]

यजुर्वेद में कहा गया है कि वही अग्नि, सूर्य, वायु, चन्द्रमा है। शुक्र, प्रकाशमान वेद, प्रतिपाद्य ब्रह्म– इन सब रूपों में व्याप्त है। जल और प्रजापति भी ब्रह्म ही है–

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद् वायुस्तद् चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजपतिः ॥[12]

यह प्रसिद्ध है कि यह ब्रह्म भगवान् सारी दिशाओं में व्याप्त होकर स्थित है। यह सबसे पहले उत्पन्न है। गर्भ में भी इसकी ही स्थिति है। उत्पन्न होकर भी यह भविष्यत्काल में भी उत्पन्न होने वाला है। सब ओर मुखादि अवयववाला अचिन्त्य शक्ति वह ब्रह्म प्रत्येक वस्तु में पूर्ण है–

एषो ह देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः।
स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास् तिष्ठति सर्वतो मुखः ॥[13]

यजुर्वेद आगे कहता है कि यह सम्पूर्ण दृश्यवान जगत उसी की महिमा है। पर वह इससे बहुत बड़ा है। यह सब उसका चतुर्थांश है–

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥[14]

जो सर्वात्मा प्रजापति सबके हृदय में स्थित होकर अन्तः प्रविष्ट है, जो अजन्मा होकर भी कार्य कारण रूप से विविध रूपों से माया से प्रपञ्चरूप से उत्पन्न होता है। सारे मूल समुदाय जिस भगवत्तत्त्व में ही स्थित है, यह सब तत्स्वरूप ही है–

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते।
तस्य योनि परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन् हतस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥[15]

वेदों में भगवत्तत्त्व के प्रतिपादक वचन सहस्रशः है। यहाँ दिये गए उदाहरण तो निदर्शनमात्र है। वेदों का मुख्य विषय और प्रतिपाद्य लक्ष्य एकमात्र 'भगवत्तत्त्व' ही है। वेदों के 'वाकोवाक्य' में 'भगवत्तत्त्व' का सुन्दर प्रतिपादन स्फुटतया लक्षित होता है।

उपनिषदों में भगवत्तत्त्व

वेदों के शीर्ष स्थानीय वेदान्त ग्रन्थ ज्ञान के आकर हैं। इनमें मुख्य रूप से जीव, जगत, ईश्वर आदि का तात्विक विवेचन प्राप्त होता है। यहाँ हम केवल उपनिषदों में व्यक्त भगवत्तत्त्व पर ही विचार करेंगे। श्वेताश्वतरोपनिषद् में भगवत्स्तुति में कहा गया है कि वह ईश्वरों का महेश्वर और देवताओं के आराध्य देव हैं–

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवतानां परमं च दैवतम्।
पतिं पतीनां परमं परस्ताद् विदाम देवं भुवनेशमीड्यम् ॥[16]

वह भगवत्तत्त्व शरीर और इन्द्रियों से परे और अनादिसिद्ध शक्तियुक्त है–

न तस्य कार्य करणं न विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबल क्रिया च ॥[17]

जिस प्रकार मकड़ी अपने ही शरीर में से निकले हुए तन्तुओं से अपने आपको वेष्टित कर लेती है इसी प्रकार इन अद्वितीय परमात्मा ने अपनी ही प्रकृति से इस सृष्टि को उत्पन्न कर उसके द्वारा अपने आपको आवृत्त कर लिया–

यस्तन्तुनाभ इव तन्तुभिः प्रधानजैः स्वभावतः।
देव एकः स्वमावृणोत् स नो दधाद्ब्रह्माप्ययम् ॥[18]

'मुण्डकोपनिषद्' में कहा गया है कि परमात्मा को न चर्म–चक्षुओं से देखा जा सकता है, न उसे वाणी द्वारा या अन्य इन्द्रियों से अथवा तप या विभिन्न कर्मों से ही ग्रहण किया जा सकता, प्रत्युत ज्ञानाप्रसाद से विशुद्ध हुए अन्तःकरण से ध्याननिष्ठ साधक उसे अनुभव कर सकता है–

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा।
ज्ञान प्रासादेन विशुद्ध सत्त्वस्ततस्तुतं पश्यते
निष्कलंध्यायमानः ॥[19]

जैसे तिल में तैल, दधि में घृत, भूमिगत अन्तः स्रोतों में जल, अरणि में अग्नि (अदृश्य रूप से) विद्यमान है, ठीक उसी प्रकार भगवत्तत्त्व अदृश्य–अव्यक्त रूप से जगत में सर्वत्र व्याप्त है–

तिलेषु तैलं दधनीव सर्पिरावः स्रोतः स्वरणीषु चाग्निः।
एवमात्मात्मनि गृह्यतेऽसौ सत्येनैनं तपसा योऽनुपश्यति ॥[20]

कंठोपनिषद् में कहा गया है कि 'वे सर्वभूतों के अन्तरात्मा सम्पूर्ण विश्व में एक हैं, एक रूप को अनेक रूपों में प्रकट करते हैं। वे एक होते हुए भी अनेक बनते हैं, जो उन्हें अपने भीतर देखता है उसे शाश्वत सुख मिलता है–

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधा यः करोति।
तमात्मास्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् ॥[21]

उस परम तत्त्व में सूर्य, चन्द्रमा, तारागण या विद्युत अग्नि की आवश्यकता आदि का प्रकाश निहित नहीं है, अपितु श्री भगवान् के प्रकाश से ही ये सूर्य चन्द्रादि

तेजस्वी पदार्थ प्रकाशमान् हैं–

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतोभान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्व तस्यभासा सर्वमिदं विभाति॥[22]

माया की उपाधि से ब्रह्म ही जगत् का उपादान कारण है तथा सर्वज्ञ, शासक आदि लक्षण होने से निमित्तकारण भी है–

मायोपाधिर्जगद्योनिः सर्वज्ञत्वादिलक्षणः।
पारोक्ष्यशबलः सत्याद्यात्मकस्तत्पदाभिधः॥[23]

वेद, यज्ञ, क्रतु, व्रत, भूत, भविष्य, वर्तमान तथा इसके अतिरिक्त जो कुछ वेद कहते हैं, वह सब मायावी ईश्वर इस अक्षर ब्रह्म से ही उत्पन्न करता है और विश्व प्रपञ्चों की माया से अन्य–सा होकर बन्धन में पड़ा गया है–

छन्दांसि यज्ञाः क्रतवो व्रतानि भूतं भव्यं यच्च वेदा वदन्ति।
अस्मान्मायी सृजते विश्वमेतत् तस्मिंश्चन्यो मायया संनिरुद्धः॥[24]

इस प्रकार उपनिषदों में निर्गुण–निराकार, सगुण–निराकार और सगुण–साकार 'भगवत्तत्त्व' का सारगर्भित विवेचन मिलता है। अपनी योग्यतानुसार मनुष्य किसी भी रूप के परायण हो कल्याण स्वरूप परम श्रेय प्राप्त कर सकता है।

पुराणों में भगवत्तत्त्व

वेदों–उपनिषदों में 'भगवत्तत्त्व' की विचारधारा आगे चलकर पुराणों में मान्य व पुष्पित हुई। श्री विष्णु पुराण में इसकी विस्तृत व्याख्या हुई। श्रीमद्भागवत् में 'भगवत्तत्त्व' की एवं देवीभागवत् में भगवती के स्वरूप का सुन्दर निदर्शन मिलता है।

विष्णु पुराण में कहा गया है कि 'ब्रह्म' शब्द का विषय नहीं है तथापि उपासना के लिए उसका 'उपचार' से अर्थात् चर्या व्यवहार की सुविधा के लिए 'भगवत्' शब्द के द्वारा कथन किया जाता है।[25] अज, अव्यक्त, अव्यय, अचिन्त्य, अनिर्देश्य, अरूप, अपाणि, अपाद, विभु, सर्वगत, नित्य, भूतों का आदिकारण, स्वयं अकारण, जिससे समस्त व्याप्य और व्यापक प्रकट हुआ है और जिसे प्रबुद्धजन ज्ञान नेत्रों से देखते हैं, वह ब्रह्म है। वही मुमुक्षुओं का परम धाम है और वही वेदवचनों से प्रतिपादित विष्णु का सूक्ष्म परम पद है। परमात्मा का यह स्वरूप ही 'भगवत्' शब्द का वाच्य है और भगवत् शब्द इस आद्य, अक्षय स्वरूप का वाचक है।[26]

देवीपुराण के पैंतालीसवें अध्याय में भगवती का स्वरूप वर्णन इस प्रकार किया गया है–

सेवते या सुरैः सर्वैताश्चैव भजते यतः।
धातुर्भजेति सेवायां भगवत्येव सा स्मृतिः॥[27]

इस व्युत्पत्ति के अनुसार भगवत् शब्द पूज्यत्व की सूचना देता है। इस सामान्य अर्थ में जब प्रतीकात्मकता जुड़ गयी तब भगवत् शब्द में ब्रह्मत्व की, समस्त विशेषताओं की समाहिति देखी गई। सिद्धि आदिक ऐश्वर्य सम्पन्नता भगवत् शब्द का वाच्य हो गयी। ब्रह्म–वैवर्त पुराण के प्रकृति खण्ड में कहा गया है–

सिद्धयैश्वर्यादिकं सर्वे यस्यामस्ति युगे-युगे।
सिद्धयादिके भगो ज्ञेयस्तेन भगवती स्मृता॥[28]

श्री विष्णु पुराण में 'भगवत्' शब्द का अर्थ एकाक्षरी कोष के अनुसार अर्थात् अक्षरों की प्रतीकार्थमयता के आधार पर किया गया है। 'भगवत्' शब्द में 'भ' के दो अर्थ हैं– पोषक और सर्वाधार। 'ग' के तीन अर्थ हैं– नेता, गमयिता और सृष्टा। नेता का अर्थ है– 'कर्मफल प्राप्त कराने वाला', गमयिता का अर्थ है– 'तय कराने वाला' और सृष्टा 'रचयिता' है। 'भ' और 'ग' की संयुति से 'भग' बना है जिसके अर्थ की चर्चा विष्णु पुराण के अनुसार लेख के प्रारम्भ में कर चुके हैं।

श्रीमद्भागवत के अनुसार भगवान् निर्गुण और निरपेक्ष है फिर भी वे सत्य, ऋत्, तेज, श्री, कीर्ति, दम आदि सब गुणों के अधिष्ठान है।[29] षड्गुण, साम्य, असंग आदि सारे गुण उन्हीं में प्रतिष्ठित है, क्योंकि वे सबके हितैषि, सुहृद, प्रियतम और आत्मा है। वस्तुतः उन गुणों को गुण कहना भी सही नहीं है; क्योंकि वे नित्य हैं, सत्त्वादि गुणों के परिणाम नहीं है। प्राकृत गुण आच्छादक और बन्धक होते हैं किन्तु भगवद् गुण मोक्ष कारक है।[30]

इस प्रकार पुराणों में भगवत्तत्त्व की विस्तृत चर्चा मिलती है जिसकी संक्षिप्त विवेचना ही यहाँ संभव है।

क्रमशः... अगले अंक में

–डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी),
दयानन्द महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

जांभाणी रचनाकार संत श्रीपरमानन्दजी बणियाल

विष्णु अवतार जांभोजी के अनुयायी बिश्नोई कहलाते हैं और अनेक बिश्नोइयों ने पुष्कल मात्रा में साहित्य सृजन किया है। बिश्नोइयों द्वारा रचित साहित्य श्रीपरमानन्दजी बणियाल को पाँच पोथियों में लिखा मिला था, जिसको उन्होंने एकत्रित कर समय-समय पर कई पोथों में लिखा।

वर्तमान समय में न तो वे प्राचीन पोथियाँ ही मिलती हैं जो परमानन्दजी को देखने एवं पढ़ने को मिलीं और न स्वयं परमानन्दजी द्वारा लिखित समस्त पोथे मिलते हैं। परम्परया सुनने में आता है कि परमानन्दजी ने कुल पाँच पोथे लिखे जिनमें से अब मात्र दो पोथे मिलते हैं। एक बिश्नोई महासभा, मुकाम के अधिकार में है व दूसरा हिसार में है।

ऋषिकेश निवासी श्रीकृष्णानन्दजी आचार्य ने इन दोनों पोथों के आधार पर सन् 2013 में पोथो ग्रंथ ज्ञान का प्रकाशन कराया है।

इन पोथों में परमानन्दजी ने अपने पूर्ववर्ती रचनाकारों की रचनाएँ तो संग्रहित की ही हैं, सम्प्रदायेतर अन्य रचनाकारों की रचनाएँ भी संग्रहित की हैं। यदि परमानन्दजी ने इन 'पोथो ग्रन्थ ज्ञानों' को न लिखा होता तो कई बिश्नोई रचनाकारों की रचनाएँ काल कवलित हो गई होतीं। इन्होंने लिखा है -

बड पोथी गिण बील्ह की, दूजी सुरजन दाख।
तीजै मुकनू मुझ गुरू, सुरताण पिता मुझ आख॥ 1॥
दसुधी दासो खिराजजी, रासोजी सुरताण।
ए पाचूँ परत्याँ बाँच के, पोथौ लिख्यौ प्रमाण॥ 2॥

(1) श्री वील्होजी (2) श्री सुरजनदासजी (3) श्री मुकुनदासजी (4) मुझ गुरु अर्थात् रासोजी तथा (5) श्री सुरताणजी पिता की प्रतियों को परमानन्दजी ने क्रमश: दसूधीजी, दासोजी, खीराजजी, रासोजी तथा सुरताणजी के पास देखकर, पढ़कर अपना एक पोथा सम्वत् 1810 में तैयार किया।

गद्य में लिखी पुष्पिका से भी उक्त तथ्य की पुष्टि होती है। यथा "**लिखतु परमाणंद संत जात्य बणहाल थापन सुरताणजी रा सुत॥ रासजी का चेला॥ दामजी रा पोता सिख॥ मारवाड़े नवकोटि रा थापना॥ अतीता गंगा पार रा अतीता रा जूना पुस्तग देख्या महंताँ री पोथी देखि। ओह ग्रंथ ग्यान लिख्यौ छ॥ सम्वत् 1798 पोथो कियो॥ सम्वत् 1810 चैत सुदि 1 पोथो संपूरण लिख्यौ छै॥ बार बुधवारि॥ वचनारथी कान्हा॥ गांव रासीसर सुभ सुथाने दामजी रा थापना॥**

एती सबद श्री वायक संपूरणो संवत 1796॥

श्री कृष्णानन्दजी आचार्य द्वारा सम्पादित व जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर से प्रकाशित 'पोथो ग्रंथ ज्ञान' के पृष्ठ 360 पर उक्त पुष्पिका प्रकाशित है। इस पुष्पिका को पढ़कर ऐसा लगता है कि उन्होंने अपना एक पोथो जो अब उपलब्ध है, वह सम्वत् 1798 में लिखना प्रारम्भ करके 1810 में संपूर्ण किया।

उपलब्ध यह पोथा उन्होंने अपने दादा गुरु दामोजी के स्थान में लिखा। यह पोथा उन्होंने कान्हा नामक बिश्नोई के पठनार्थ लिखा।

श्री कृष्णानन्दजी आचार्य ने लिखा है कि श्री परमानन्दजी ने पोथा सम्वत् 1796 में लिखना प्रारम्भ कर सम्वत् 1810 में पूरा किया। यदि इस बात को मान लिया जाये तो उक्त पुष्पिका में आये सम्वत् 1798 का क्या करें? उसकी संगति कैसे बैठाएँ?

चूँकि मैंने राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश आदि में लिपिकृत दसों हजार हस्तलिखित ग्रंथों का अवलोकन किया है; लगभग 2000 ग्रंथों का सूचीकरण किया है। ऐसा करते समय इस प्रकार की समस्याओं से दो-चार होना पड़ता रहा है। कभी-कभी कुछ-कुछ प्रतियों में संकेत भी मिल जाते हैं।

यहाँ इन दोनों सम्वतों की संगति इस प्रकार बैठती है।

श्री परमानन्दजी ने अपने पिता सुरताणजी की प्रति के साथ-साथ अन्य चार की प्रतियाँ और देखी व पढ़ी थीं। इन पाँच में से उनके गुरु रासोजी तथा पिता

सुरताणजी इनके समकालीन व कुशल प्रतिलिपिकार थे और इन दोनों की पोथियाँ इनको सहज में हमेशा उपलब्ध रही थीं। उनसे शिक्षा और प्रेरणा पाकर ही इन्होंने पोथा लिखना सीखा व प्रारंभ किया। अत: ऐसा विश्वास करने का पक्का कारण है कि श्री परमानन्दजी ने सम्वत् 1796 में लिखित प्रति से अपना पोथा सम्वत् 1798 में लिखना प्रारम्भ किया और उन्होंने इसको सम्वत् 1810 में संपूर्ण किया। इस प्रकार इनको इस पोथे को लिखने में 12 वर्ष का लम्बा समय लग गया।

प्रश्न उठ सकता है कि एक पोथे को लिखने में 12 वर्ष का समय कैसे लग गया? जबकि इनको एक ही जगह पर सम्वत् 1796 में लिखा पोथा उपलब्ध था।

इसका भी समाधान यह है कि श्री परमानन्दजी को जो पोथी सम्वत् 1796 की मिली वह केवल 'श्रीवायक' अर्थात् जांभोजी के सबदों की पोथी थी। अन्य पोथियाँ उनको दसूधीजी, दासोजी, खीराजजी व रासोजी के यहाँ मिलीं और उनकी सामग्री को उन्होंने क्रमबद्धता के साथ लिखी। किसी ने अपनी पोथी कब दिखाई तथा किसी ने अपनी पोथी कब दिखाई। इस प्रकार जगह-जगह से वाणियाँ लिखकर लाने में इनको 12 वर्ष का समय लगा, जिसका लगना स्वभाविक है।

चूँकि इन्होंने सम्वत् 1798 से 1810 के मध्य लिखा पोथा अपने दादागुरु दामोजी के स्थान में लिखकर पूर्ण किया; अत: इस बात की पूरी-पूरी संभावना है कि सम्वत् 1796 की प्रति इनको इनके गुरु-स्थान में मिली हो और वह इनके गुरु रासोजी की ही लिखी हुई हो। गुरुजी इनके समकालीन ही थे। अत: 1796 की प्रति उनके द्वारा ही लिखी हुई होगी, इसकी प्रबल संभावना है। वैसे इस प्रति को इनके पिता सुरताणजी द्वारा लिखी हुई भी मानी जा सकती है।

हमारे उक्त विवेचन के आलोक में श्री कृष्णानन्दजी आचार्य के निम्न कथन प्रश्नचिह्नांकित हो जाते हैं क्योंकि इनके कथन किसी तर्क अथवा प्रमाण पर आधारित न होकर चलते कथन मात्र हैं।

"सबसे बड़ी पोथी तो वील्होजी की थी तथा उनके बाद सुरजनजी, केसोजी, मुकनूंजी, सुरताणजी आदि के किये हुए संग्रह परमानन्दजी को प्राप्त हुए थे तथा दसुधी, दासो, खिराज, रासोजी एवं सुरताणजी से आज्ञा एवं उनसे प्रमाणित करवा करके यह पोथा परमानन्दजी ने लिखा था।" पृष्ठ V भूमिका।

यहाँ आचार्यजी ने केसोजी का नाम लिखा है जबकि परमानन्दजी के दोहे में केसोजी का कहीं नाम ही नहीं है। परमानन्दजी स्पष्ट रूप से वील्होजी, सुरजनजी, मुकनूंजी, मुझ गुरु अर्थात मेरे गुरु रासोजी तथा मुझ पिता सुरताणजी की पोथियाँ मुझे उपलब्ध हुईं, का उल्लेख करते हैं।

आचार्यजी ने अगले दोहे का तो पूरा अनर्थ ही कर डाला है। उनके अर्थ की संगति दूर-दूर तक नहीं बैठती। विचार करने की बात यह है कि उक्त पाँच व्यक्तियों में से परमानन्दजी के समकालीन दो व्यक्ति थे, जब यह पोथा लिखा गया। गुरु रासोजी तथा पिता सुरताणजी। दोनों की पुस्तकें दोनों के पास से ही मिलीं। अत: परमानन्दजी ने दोनों का नाम लिखा। इन दो नामों के पूर्व तीन नाम और हैं। ये तीनों नाम उन व्यक्तियों के हैं जिनके अधिकार में वील्होजी, सुरजनजी व मुकनूंजी के पोथे परमानन्दजी के समय में थे। अत: परमानन्द जी ने उन पाँचों व्यक्तियों के भी नाम लिखे हैं जिनके अधिकार में उक्त पाँच वील्होजी, सुरजनजी, मुकनूंजी, रासोजी व सुरताणजी के पोथे उपलब्ध थे।

इस प्रकरण को समाप्त करने के पूर्व डॉ. हीरालालजी माहेश्वरी के मन्तव्य पर दृष्टिपात करना और जरूरी है। वे लिखते हैं- 'इस सम्बन्ध में इसमें लिपिबद्ध 'सबदवाणी' की पुष्पिका रूप, उनके दोहे दृष्टव्य हैं-

बड पोथी गिण वील्ह की, दूजी सुरजणदास।
तीजै मुकनूं मुझ गुरु, सुरताण पिता मुझआख॥
दसुंधी दासो खीराजजी, रासोजी सुरताण।
अै पाचूँ परत्यां बांच कै, पोत्थो लिख्यौ प्रवाण॥
कै बात सुणी साधां कनां, कै पोथियां मां परवाणि।
परमाणंद सुरताण रै, लिखिया सबद सु जाण॥4॥
दीठा बाच्या मैं लिख्या, सासतर मां था सोय।

ग्याता कोई वांच कै, दोस न देइयो मोय ॥5॥
मैं तो मांड्या मोहकर, पुस्तक देखि विचारि।
सबदां अरथ अनंत है, जाणै सिरजणहारि ॥6॥
कचा सब संसार है, सचा सबद ततसार।
परमानंद सु परमगुरु, राखौ हेत पियार ॥7॥

सम्वत् 1796 से 1810, 14 वर्षों तक वे इसे लिपिबद्ध करते रहे थे। पोथे के अंत में दी गई पुष्पिका से उनके इस महान् प्रयास का पता चलता है– 'लीखतुं परमाणंद संत जात्य बणहाल थापन सुरताणजी रा सुत रासजी रा चेला दामजी रा पोता सिख मारवाड़े नव कोटी रां थापनां अतीतां गंगा पार रा अतीतां का जुनां पुसतक देख्या महंतां री पोथि देखि ओह ग्रंथ ग्यान लीख्यौ छ संमत 1798 पोथो कीयौ संमत 1810 चत सुदे 1 पोथौ संपुरण लिख्यौ छ बार बुधवारि वचनारथी कान्हा गांव रासीसर सुभ सुथाने दाम री थापना। यहाँ पोथे का आरंभकाल संवत् 1796 की अपेक्षा सम्वत् 1798 भूल से ही लिखा गया है, क्योंकि इसी में लिपिबद्ध 'सबदवाणी' की पुष्पिका है– एतिसबद श्रीवायक सपरणो संमत 1796'।

परमानन्दजी दो गुरुओं के शिष्य रहे थे। आरंभ में वे मुकनोजी के शिष्य थे, किन्तु सम्वत् 1796 के लगभग रासोजी के 'खोळे' (गोद) जाकर उनके शिष्य बने। 'पोथे' में लिखित सबदवाणी की पुष्पिका के समय संवत् 1796 में मुकनोजी उनके गुरु थे, जैसा कि ऊपर उद्धृत दोहे में वर्णित है; किन्तु इसकी उल्लिखित समाप्ति पुष्पिका सम्वत् 1810 में, वे अपने को रासोजी का चेला बताते हैं। ऐसा कभी गुरु विशेष के आग्रह पर अथवा गुरु परम्परा विशेष को लुप्त होने से बचाने के लिए या उसकी समृद्धि हेतु और कभी शिष्य की इच्छा से होता था। केवल यही नहीं, कभी-कभी कारणवश स्वर्गवासी गुरु के खोळे भी शिष्य जाते थे। सुप्रसिद्ध सिद्ध कवि साहबरामजी राहड़ आरंभ में गोविन्दरामजी के शिष्य थे, किन्तु पश्चात् स्वर्गवासी महन्त गुलाबदासजी के खोळे जाकर उनके शिष्य बने थे।' पृष्ठ 858-859, जांभोजी बिश्नोई सम्प्रदाय और साहित्य, भाग 2।

डॉ. माहेश्वरी की कुछ बातें विचारणीय हैं। परमानन्दजी स्पष्ट रूप से पाँच प्रतियाँ देखने की बात कहते हैं। अत: प्रारम्भिक दोनों दोहों में से हमें उन पाँच प्रतियों के नाम ढूँढने होंगे, जिनको परमानन्दजी ने पढ़ा। इसके विपरीत डॉ. माहेश्वरी 'मुझ गुरु' पद को मुकनूंजी का विशेषण मानते हैं। मुझ गुरु को मुकनूंजी का विशेषण मान लेने पर चार नाम ही रह जाते हैं। (1) वील्होजी (2) सुरजनजी (3) मुकनूंजी व (4) सुरताणजी। जैसा हम पूर्व में बता चुके हैं, मुझ गुरु शब्द मुकनूंजी का विशेषण न होकर स्वतंत्र नाम है और वह रासोजी के लिए प्रयुक्त है। चूंकि पोथा सम्वत् 1810 में पूर्ण हुआ और सम्वत् 1810 में ही परमानन्दजी ने पुष्पिका लिखी। अत: परमानन्दजी ने संवत् 1810 में विद्यमान गुरु का ही संकेत 'मुझ गुरु' पद में किया है।

डॉ. माहेश्वरी का यह लिखना सर्वथा हास्यास्पद है कि दोहों में परमानन्दजी ने पूर्व गुरु मुकनूंजी का स्मरण किया है जबकि गद्य पुष्पिका में खोळे बैठाने वाले गुरु रासोजी का। डॉ. माहेश्वरी का यह तर्क तब तो जँचने वाला होता जब दोहे पोथे के प्रारम्भ में मिले होते तथा गद्य पुष्पिका ग्रंथ के अंत में मिली होती। जब दोनों पद्य-गद्य कथन संवत् 1810 में लिखे गये तब पूर्व-गुरु और उत्तर-गुरु का प्रश्न उठता ही नहीं। खोळे आने पर ग्रंथकार नये गुरु का ही स्मरण करता है और परमानन्दजी ने भी ऐसा ही किया है। संत संप्रदायों में यही परंपरा थी व अब भी है। अत: लिपिकार ने पोथा प्रारंभ करने का सम्वत् 1798 सही ही लिखा है; इसमें भूल करने जैसी कोई बात नहीं है।

सम्वत् 1796 का समाधान हम पूर्व में ही प्रस्तुत कर चुके हैं। परमानन्दजी ने जिस प्रति से गुरु जांभोजी के सबद उतारे थे, वह प्रति सम्वत् 1796 में लिखी हुई थी और परमानन्दजी ने वह सम्वत् यथारूप अपने पोथे में उतार लिया था। अत: परमानन्दजी ने अपना पोथा लिखना सम्वत् 1798 में ही प्रारम्भ किया या न कि 1796 में जैसा डॉ. माहेश्वरी ने लिखा और आचार्यजी ने माहेश्वरीजी की स्थापना को बिना सोचे-विचारे घुमा-फिराकर स्वीकार की है। हमने जो स्थापना

सुनिश्चित् की है, उसके प्रमाण के लिए कहीं इधर-उधर जाने की आवश्यकता नहीं है। स्वयं परमानन्दजी के द्वारा पृष्ठ 348 व 360 पृष्ठों पर लिखी पुष्पिकाएँ हमारी स्थापना को पुष्ट करती हैं।

जिस पोथे से आचार्यजी ने पाठ का सम्पादन किया है, वह सम्वत् 1838 में लिखा गया है जैसाकि पृष्ठ 348 पर उपलब्ध पुष्पिका कहती है- '**एति एक सौ दोय प्रसंग संपूरण समापीत समत 1838**' यहां प्रसंग समाप्त हुए हैं, परमानन्दजी की पूरी वाणी नहीं। अत: यहां परमानन्दजी ने अंगों को समाप्त करने का समय लिखा है।

जब परमानन्दजी के द्वारा अपनी सम्पूर्ण वाणी पूरी की गई तब उन्होंने अपने द्वारा लिखे गये प्रथम पोथे की पुष्पिका को भी सम्वत् 1838 में लिखे पोथे में यथारूप उतार दी गई; तबही यह पुष्पिका भी सम्वत् 1838 के पोथे में उपलब्ध है। ठीक इसी प्रकार जब परमानन्दजी ने सम्वत् 1796 की प्रति से पाठ उतारा तब वह सम्वत् भी यथारूप नकल करने में आया है। अत: यह भ्रम मात्र ही है कि परमानन्दजी द्वारा पहला पोथा सम्वत् 1796 से 1810 के मध्य लिखा गया। सत्य यह है कि पोथा सम्वत् 1798 से 1810 के मध्य 12 वर्षों में लिखा गया।

हमने पूर्व में ही यह स्पष्ट कर दिया है कि परमानन्दजी को पहला पोथा लिखने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगा क्योंकि उनको स्थान-स्थान से सामग्री एकत्रित करनी पड़ी। अगले पोथों में इतना समय नहीं लगा क्योंकि अधिकांश सामग्री उनके पास प्रथम पोथे में थी। उसमें बढ़ाने वाली सामग्री के लिए ही समय लगा, अन्यथा नहीं। लिखने में जो समय लगता है, वह तो लगा ही।

खोळे जाने की परम्परा जांभोजी के सम्प्रदाय में ही नहीं, सभी सम्प्रदायों में है। अत: इसमें कोई नवीनता की बात नहीं है।

डॉ. माहेश्वरी ने दूसरे दोहे में आए पांच नामों के बारे में कुछ भी नहीं कहा। यदि वे दोनों दोहों पर एक साथ विचार करते तो न उनको दुरूह कल्पना करनी पड़ती और न पाँच की जगह चार नामों से ही संतुष्ट हो जाना पड़ता।

डॉ. माहेश्वरी ने पादटिप्पणी में इस पोथे का इधर से उधर हस्तांतरित होने का बड़ा ही रोचक इतिहास लिखा है। यह इतिहास सत्य हो सकता है, इसमें संदेह के लिए गुंजाइश नहीं है किन्तु डॉ. माहेश्वरी की एक बात विचारणीय है। उन्होंने लिखा है कि यह पोथा दामोजी के स्थान में न होकर परमानन्दजी के परिवारवालों के पास था और अकाल में उन्होंने इसको 80 रुपये में रेहन रख दिया था।

यदि हम परमानन्दजी की गद्य पुष्पिका को ध्यान से पढ़ें तो हमें ज्ञात होगा कि परमानन्दजी ने यह पोथा गुरु स्थान में रखने के लिए न लिखकर कान्हा नामक व्यक्ति के पठनार्थ लिखा था और उसको या तो भेंट लेकर बख्शीश किया था या वैसे ही बख्शीश कर दिया था। यह पोथा उनकी संपति न होकर कान्हा नामक व्यक्ति की व्यक्तिगत सम्पति थी। अत: पोथे का गुरु-स्थान में न मिलना आश्चर्यकारक नहीं, सत्य है; डॉ. माहेश्वरी द्वारा उपलब्ध करवाई गई कहानी में ऐसा अनुमान व विश्वास होता है कि यह कान्हा नामक व्यक्ति परमानन्दजी के परिवार का ही कोई व्यक्ति रहा होगा। अत: यह पोथा परमानन्दजी के परिवारवालों के पास वर्षों तक रहा। डॉ. माहेश्वरी का उक्त ग्रंथ अत्यधिक खोजबीन के उपरान्त लिखा गया है और अधिकांशत: प्रामाणिक जानकारी देता है; फिर भी कहीं-कहीं उनसे भूलें हुई हैं जिनका परिमार्जन अत्यावश्यक है। उक्त जैसी ही एक अन्य भूल और बताना प्रासंगिक होगा।

डॉ. माहेश्वरी ने लाहौर के लड़बावरा कान्हा के एक पद को परमानन्दजी के पोथे में मिल जाने के कारण बिश्नोई कान्हा बारहठ का पद मान लिया। मैंने मेरी पुस्तक 'कान्हा-ग्रंथावली' में इस तथ्य की विस्तृत आलोचना कर सही तथ्य प्रस्तुत किया है।

क्रमश:.... अगले अंक में

-ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल
संपादक श्रीरामस्नेही-संदेश
60/60, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर-302020
मो.: 9351503555, email: bks@mactool.com

गुरु जम्भेश्वर और अवतार : 'सबदवाणी' के परिप्रेक्ष्य में

अवतार की संकल्पना भक्ति का संवेदनशील तत्त्व है। भारतीय साहित्य में भक्ति का आधार-स्तम्भ अवतारवाद है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। अवतार का शाब्दिक अर्थ है- नीचे उतरना, आविर्भाव होना।[1] बहुधा उच्चस्थिति में पहुँचने को अवतार कह दिया जाता है परन्तु यह तो आरोहण की अवस्था है जबकि अवतार का अर्थ तो है उच्च स्थान से नीचे की ओर उतरना- अवतरण।[2] कई बार अवतार का पर्याय जन्म से भी लिया जाता है किन्तु जहाँ तक अवतार और उसके पर्यायवाची शब्दों का अवतारवाद से संबंध है, वहां निश्चय ही अवतार शब्द सामान्य उत्पत्ति या जन्म के अर्थ में नहीं लिया जाता।[3] अवतार धारण करने के पीछे तीन उद्देश्य बताये गए हैं- साधु परित्राण, अधर्मियों का निग्रह तथा धर्म-संस्थापन। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में भी कहा है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यह्य॥
परित्राणाय साधुनां विनाशय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

मध्यकालीन भक्ति साहित्य में अवतार केन्द्र में रहे हैं। हालांकि, निर्गुण भक्ति में अवतारवाद की आलोचना अधिक की गई है। यह प्रभाव संतों ने नाथों से ग्रहण किया है। उत्क्रमणशील साधना से सम्बद्ध होने के कारण ये नाथ एक प्रकार से अवतारवाद के आलोचक ही रहे हैं। फिर भी ये तत्कालीन पौराणिक अवतारवादी प्रवृत्तियों से बहुत कुछ प्रभावित प्रतीत होते हैं।[4] इसका साक्षात् प्रमाण यह है कि समय के साथ नाथ-सम्प्रदाय में गुरु गोरखनाथ को भी अवतार मानने का दृष्टिकोण विकसित हुआ। गुरु जम्भेश्वर की अवतार संबंधी धारणा इस दृष्टि से विलक्षण है क्योंकि एक तरफ इनकी साधना-पद्धति का केंद्र-बिंदु निर्गुण विष्णु है जबकि दूसरी तरफ ये भिन्न-भिन्न युगों में अवतार धारण करने का वर्णन करते हैं जो भक्ति साहित्य की परम्परा में अन्यत्र दुर्लभ है। स्वयं जाम्भोजी के रूप में अवतार लेने के पीछे इन्होंने विशिष्ट एवं मौलिक कारण बताया है-

पांच करोड़ी ले पहराजा तरियौ, खरतर करी कमाई।
सात करोड़ी ले राजा हरिचंद तरियौ
तारादे रोहतास हरिचंद वाट विकाई।
नव करोड़ी ले राव दहूळ तरियौ, धन्य कुंतांदे माई।
बा'रां कोड़ि संमांहंण आयौ, पहराजा सूं कौळ ज
थाई।[5] (सबद-99)

अर्थात् भक्त प्रह्लाद ने बहुत ही श्रेष्ठ कमाई की क्योंकि उन्होंने पाँच कोटि जीवों के साथ मुक्ति प्राप्त की थी। महाराजा हरिश्चंद्र ने सात कोटि जीवों के साथ मुक्ति प्राप्त की। इस हेतु उनको अनेक कष्ट उठाने पड़े। महाराजा हरिश्चंद्र, उनकी पत्नी तारादे और पुत्र रोहिताश्व को बाजार में बिकना पड़ा था। महाराजा युधिष्ठिर ने नौ कोटि जीवों के मध्य मुक्ति प्राप्त की (उनकी माता कुन्ती धन्य है। इस प्रकार सत्य, त्रेता और द्वापर-तीनों युगों में क्रमशः पाँच, सात और नौ-कुल इक्कीस कोटि जीवों का उद्धार हो चुका है। इस तरह मैं 'शेष' बारह कोटि जीवों के उद्धारार्थ आया हूँ क्योंकि मैं भक्त प्रह्लाद से इस हेतु वचनबद्ध हूँ। इस प्रकार जाम्भोजी के अवतार धारण का हेतु पूर्णतः नवीन एवं मौलिक है।

भगवान प्रेम के वशीभूत हैं और भक्त का प्रेम ही उसे नाना रूपों में आने के लिए विवश करता है। अवतार धारण करने के पीछे जनकल्याण की भावना बलवती रूप में कार्य करती है। विष्णु के नौ अवतारों का वर्णन मानव-जाति को तारने के प्रसंग में ही आया है। भगवान् केवल सत्तामय या केवल चिन्मय नहीं हैं, चिन्मय रूप उनका एक अंग है। इसी चिन्मय रूप को ब्रह्म कहते हैं। इस ऐश्वर्यमय रूप को तत्त्ववेत्ता लोग परमात्मा कहते हैं (परन्तु भगवान् का जो पूर्ण रूप है, वह प्रेममय है। यही भगवान् पृथ्वी पर अवतार ग्रहण किया करते हैं।[6] ईश्वर का यह रूप जीवों को सामान्य-सा दृष्टिगोचर होता है एवं भगवद् कृपा से ही उनका वास्तविक स्वरूप जाना जा सकता है। मानव शरीर धारण किये हुए वे अनेक कष्टों को भोगते नजर आते हैं, यह मात्र लीला है। वास्तव में, वे संसार के सभी भोगों-क्लेशों से निर्लिप्त रहते हैं परन्तु कर्म के क्षेत्र में उनकी भूमिका ओजस्वी रूप से सक्रिय रहती है। गुरु जाम्भोजी अपने इस निराकार रूप के विषय में कहते हैं-

नां मेरे माया न छाया रूप न रेखा।[7] (सबद-17)

अर्थात् मैं भ्रम और प्रपंच रूप माया और अज्ञान रूप छाया से परे हूँ। कारण और कार्य से रहित हूँ तथा रूप और रेखा से रहित हूँ-निराकर हूँ। इस दृष्टि से सबदवाणी की अवतार संबंधी संकल्पना गीता से साम्य रखती है। गीता में श्रीकृष्ण को पूर्ण ब्रह्म या पुरुषोत्तम ही निर्दिष्ट किया गया है। गीता में

अवतार संबंधी किसी सीमा या विकार को स्वीकार नहीं किया गया और यही भाव सबदवाणी में है। 'सबदवाणी' में गुरु जाम्भोजी के अवतार लेने के अनेक वर्णन आये हैं जिनमें एक स्थान पर उन्होंने अपनी कर्मभूमि की चर्चा भी की है-

भगवीं टोपी थळ सिरि आयौ;

हेत मेल्हांण करीलो।[8] (सबद-27)

अर्थात् मैं भगवीं टोपी धारण करके सम्भराथळ पर आया हूँ। मेरे आने का उद्देश्य बारह कोटि जीवों का, पूर्व रूप में मुक्त हुए इक्कीस कोटि जीवों से मिलाप कराना है। ईश्वर किसी विशेष कार्य की सिद्धि हेतु अवतरण लेते हैं और कार्य पूर्ण होते ही लीलाधाम से तिरोहित हो जाते हैं, वे नियत समय से अधिक नहीं ठहरते। इस ओर संकेत करते हुए गुरु जाम्भोजी कहते हैं-

तेतीसां की वरग वहां म्हे; बा'रां काजै आयो।

बा'रां काजि घंणा न ठाहर।[9] (सबद-27)

अर्थात् तेतीस कोटि जीवों के उद्धार के लिए हमारा संसार में आना होता है। इस बार बारह कोटि जीवों के उद्धारार्थ आया हूँ। बारह कोटि जीवों को तारने के पश्चात् यहाँ अधिक नहीं ठहरूँगा। अवतारवाद के वैशिष्ट्य के बारे में चर्चा की जाये तो एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू उभर कर सामने आता है कि गुरु जाम्भोजी ने स्वयं को विष्णु का अवतार घोषित करते हुए कहीं भी यह इंगित नहीं किया कि उनकी आराधना की जाये। वे यही उपदेश देते हैं कि निर्गुण विष्णु का जप करो, हम किसी जन्म-धारण किये हुए जीव का जप नहीं करते। इसके विपरीत यह भी कहते हैं कि विष्णु के जो नौ अवतार हुए हैं वे हमारे ही थे-

म्हे जपां न जाया जीयौं।

नव अवतार न्यंमो नारायण,

ते पंणि रूप हमारा थीयौं।[10] (सबद-4)

यहाँ अवतार संबंधी अवधारणा में विरोधाभास स्पष्ट देखा जा सकता है। जनसाधारण भक्ति के लिए एक आधार चाहता है और उसकी कल्पना किसी साँचे में ढलना चाहती है, उसका हृदय आराध्य का सामीप्य चाहता है। यह सामीप्य अवतार की परिकल्पना द्वारा ही पुष्ट होता है। विष्णु के नौ हो चुके और दसवां-जाम्भोजी का अवतार, मनुष्य के विश्वास और श्रद्धा को पुष्ट करते हैं। अवतारवाद के खण्डन का जहाँ तक प्रश्न है-जाम्भोजी स्वयं को अवतार कहते हुए भी सिर्फ निर्गुण विष्णु का जप करने का उपदेश देते हैं और अवतार पूजन को वर्जित करते हैं।

यह चेतना वास्तव में मध्यकाल की ही नहीं, आज के समय की भी मांग है। मनुष्य कहीं बाह्य रूप के भँवर में उलझकर न रह जाये और मूल तत्त्व का संधान ही न कर पाये; इसलिए यह आवश्यक है कि मात्र निर्गुण का ही स्मरण किया जाये, जहाँ किसी पाखण्ड के लिए कोई स्थान नहीं है। मनुष्य की आत्मा ही गुरु है और वही व्यक्ति को सद्मार्ग की ओर प्रेरित करती है।

अत: 'सबदवाणी' के परिप्रेक्ष्य में गुरु जम्भेश्वर और अवतार के वास्तविक पक्ष को भली-भाँति समझा जा सकता है। गुरु जाम्भोजी के अवतार और उनकी अवतार संबंधी अवधारणा में एक विरोधाभास है, वे अवतार का समर्थन भी करते हैं और आलोचना भी। चिंतन का यह पक्ष सगुण-निर्गुण भक्ति के संगम को दर्शाता है। साधना की एक धारा सगुण है जबकि साधना का मूल- निर्गुण ब्रह्म है। इस साधना-पद्धति द्वारा व्यक्ति सांसारिक प्रपंच में पड़े बिना ईश्वर के सगुण स्वरूप में श्रद्धा और प्रेम का बीजारोपण करके निर्गुण विष्णु रूपी डोर के माध्यम से मूल तत्त्व तक पहुँच सकता है। निष्कर्षत: यह गुरु जम्भेश्वर और उनकी अवतार संबंधी धारणा का लोकरंजनकारी और लोकमंगलकारी समन्वयात्मक स्वरूप है।

संदर्भ सूची :

1. पिल्लै, डॉ. एन.पी. कुट्टन: पौराणिक संदर्भ कोश: हैदराबाद, मिलिन्द प्रकाशन, द्वि. सं. 2003, पृ. 61
2. पोद्दार, हनुमानप्रसाद: भगवच्चर्चा: गोरखपुर, गीताप्रेस, 1997 पृ. 183
3. पाण्डेय, डॉ. कपिलदेव: मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद: वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, 1963, पृ. 11 (पीठिका)
4. वही, पृ. 103
5. माहेश्वरी, डॉ. हीरालाल: श्री जम्भवाणी (टीका) : अबोहर, श्री गुरु जम्भेश्वर साहित्य सभा (रजि.), द्वि. सं. मई, 2011, पृ. 286
6. द्विवेदी, डॉ. मुकुंद: हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली भाग-9: नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., अगस्त, 1981, पृ. 340
7. माहेश्वरी, डॉ. हीरालाल: श्री जम्भवाणी (टीका) : अबोहर, श्री गुरु जम्भेश्वर साहित्य सभा (रजि.), द्वि. सं. मई, 2011, पृ. 59
8. वही, पृ. 86, 9. वही, पृ. 87, 10. वही, पृ. 23

-**शर्मीला** (शोद्यार्थी)

हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय,

चण्डीगढ़- 160014

सुखमय जीवन का रहस्य है- यज्ञ

आज का मनुष्य चिंतित, पीड़ित रहता है। कभी यह परेशानी तो कभी वह तकरार! क्या मनुष्य जीवन में खुशियां हैं ही नहीं? मानव शरीर को तीर्थस्थान माना जाता है। यह मनुष्य योनि सुखमय मंगलमय है। इससे श्रेष्ठ कोई योनि नहीं है। गीताजी के पहले अध्याय का पहला श्लोक है 'धर्म क्षेत्रे, कुरुक्षेत्रे....।' इस धर्म क्षेत्र को कुरुक्षेत्र बनाती है हमारी वृत्तियाँ। गीताजी के तीसरे अध्याय (श्लोक 10) में श्रीकृष्ण कहते हैं कि जब ब्रह्म देव ने सृष्टि की रचना की तो उन्होंने मनुष्य को यज्ञ सहित उत्पन्न किया। फिर उन्होंने वरदान दिया कि यज्ञ से ही तुम फलोगे-फूलोगे। ये ही तुम्हारी कामधेनु होगी।

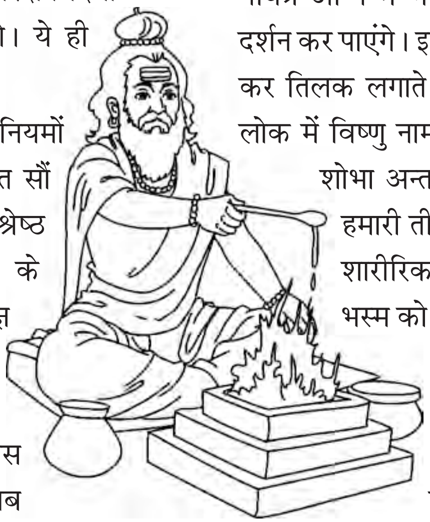

स्वयं भगवान जाम्भोजी ने 29 नियमों में बताया- 'होम, हित, चित... प्रित सौं बास बैकुंठे पावौ।' यज्ञ को वेदों में श्रेष्ठ माना गया है और हिंदुस्तान के कोने-कोने में यज्ञ किया जाता है। यज्ञ हमें जीवन जीने की शैली सिखाता है। यज्ञ सभी को खुशहाली और समृद्धि का वरदान देता है। परन्तु जिस क्षेत्र में सब मैं-मैं करने लगते हैं, तब स्वार्थ बुद्धि उत्पन्न हो जाती है, तो वहां से श्रीविजय, विभूति, लक्ष्मी और शांति, खुशी वहां से निकल जाते हैं। अगर हमने अपनी वृत्ति स्वार्थभाव से हटाकर निःस्वार्थ बनाई तो तुरंत जिस खुशी के पीछे-पीछे हम दौड़ते थे। वो खुशी हमारे पीछे दौड़ने लग जाएगी। जरा सोचिए, याद कीजिए कि कभी जब आप भी चिंतित, परेशान थे, क्या उसका मूल कारण यह नहीं था कि मेरी इच्छानुसार चीजें नहीं हो रही। परेशानी का एक मूलभूत कारण है- मैं जब दो 'मैं' 'हम' में बदल जाता है। आप सब की भलाई के लिए सोचते हैं तो सुखी हो जाते हैं। इसी से मिलती है अंदरूनी खुशी। ये खुशी किसी चीज पर निर्भर नहीं होती। बल्कि शुभ भावना पर ही आधारित है।

कोई भी कार्य करो उसमें सेवा भाव होना चाहिए यानि कि बिना स्वार्थ चाहे हमसे कुछ किया जाए या नहीं। वो भाव ही काफी है। कहते हैं- चुपचाप खड़े हो कर, जो प्रतीक्षा कर रहा है, वह भी तो सेवा ही कर रहा है, अगर हम एक-दूसरे की भलाई की भावना से काम करते जाएंगे, तो न केवल सुखी होंगे बल्कि आध्यात्मिक रूप से विकसित भी होंगे। हमारी इच्छाएं, वासनाएं यज्ञ की पवित्र अग्नि में भस्म हो जाएगी और हम भगवान के दर्शन कर पाएंगे। इसलिए भस्म को तीन लाइन में कपाल कर तिलक लगाते हैं और बोलते हैं कि 'तिलक तीन लोक में विष्णु नाम ततसार, ध्रुव प्रह्लाद मस्तक चढ़े, शोभा अन्त न पार।' यह दिखाने के लिए कि हमारी तीन तरह की वासनाएं हमने मिटा दी- शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक। इसलिए भस्म को विभूति के नाम से भी जाना जाता है। इस तरह यज्ञ जिंदगी में हमारा मार्गदर्शन करता है। सुख और समृद्धि की रहस्यमयी दिशा दिखलाता है। कहते हैं कि-'यज्ञ देव प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए, छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए। वेद की बलि ऋचाएं, सत्य को धारण करें। हर्ष में हो मग्न सारे, शोक सागर से तरें। प्रेम से हम नित्य ही गुरुजनों का पूजन करें, प्रेम से हम नित्य ही, धर्म संस्कृति का आदर करें। ब्रह्मविद्या, योग विद्या हो अधिक प्यारी हमें। ब्रह्मनिष्ठा प्राप्त करके सर्वहितकारी बनें।

-मानती देवी बिश्नोई

झुंपा कलां, सिवानी, जिला भिवानी (हरियाणा)

मो.: 96713-78307

भक्तिकाल की संत परम्परा और गुरु जाम्भोजी

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को 'स्वर्ण युग' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। इस काल में पूरा देश राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक संक्रमण से गुजर रहा था। इस समय में साहित्य, दर्शन, इतिहास, संस्कृति, धर्म, संगीत आदि का पतन हो चुका था।

इस सांस्कृतिक संक्रमण काल में अनेक संतों एवं महापुरुषों ने धर्मरक्षण और समाज कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके अप्रतिम योगदान के समक्ष श्रद्धानवत जनमानस ने इन्हें देवतुल्य, पूज्यत्व तथा श्रद्धा प्रदान करके युग-युगान्तर तक इनकी स्मृति एवं इनकी स्मृति एवं इनके सिद्धान्तों, कार्यों के प्रति अपनी आस्था को अक्षुण्ण बना दिया।

मध्यकाल में 14वीं, 15वीं शताब्दी में अनेक महापुरुषों ने अवतार लिया तो उनके साथ-साथ इस्लाम धर्म ने भी अपना प्रभाव जमाया। इस्लाम धर्म ने भी अपना आचरण, विचार, संस्कृति का प्रभाव जनमानस पर छोड़ा। इस्लाम धर्म की चार शाखाएं प्रमुख रूप से प्रचलित रही जिसमें चिश्तिया, कादरिया, सुहारवर्दी, नक्शबंदिया है। जिनके प्रमुख केन्द्र अजमेर, नागौर, अलवर, पाली, मेड़ता, खाटू, डीडवाना आदि नगर हैं।

इस समय में जनमानस में सर्वाधिक लोकप्रिय हुए पंचपीर जिन्होंने अपनी-अपनी विचारधारा अनुसार सबको प्रभावित किया व सबका कल्याण किया-

पाबू हड़बू रामदे मांगलिया मेहा।
पांचू पीर पधारज्यो गोगादे जेहा॥

इनके साथ-साथ अनेक अन्य संतों जिसमें दादू दयाल, रज्जब लालदास, चरणदास, मावजी, जसनाथ जी, मीराबाई, रैदास, जाम्भोजी आदि ने सदुपदेशों से जनसाधारण में अभिनव चेतना का संचार किया।

इस काल में भक्ति की दो प्रमुख धाराएं प्रवाहित हुई- निर्गुण और सगुण। आगे चलकर निर्गुण की संत और सूफी काव्यधाराओं का विकास हुआ। निर्गुण के प्रवर्तक रामानन्द थे। रामानन्द के शिष्य कबीर थे।

कबीर के समकालीन बिश्नोई पंथ के प्रवर्त्तक भगवान् जम्भेश्वर भी निर्गुण भक्ति के प्रतिष्ठापक थे। इनका अवतार 1451 ई. में नागौर जिले के पीपासर गांव में हुआ। इनके पिता का नाम लोहट जी व माता का नाम हंसा था। इन्होंने ईश्वर, आत्मा, मोक्ष, जीव, जन्म-मरण के विषय में विचार दिए। उन्होंने निर्गुण व सगुण तथा कथनी व करनी का समन्वय किया। 'जीवों' ने जुगती, मुंवा ने मुक्ति का संदेश दिया अर्थात् युक्तियुक्त जीवनयापन करते हुए, मृत्यु के पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति कर सके।

बिश्नोई सम्प्रदाय की आचार संहिता में शुद्ध आचार-व्यवहार, यज्ञ, पर्यावरण संरक्षण, वैदिक मंत्रों का उच्चारण, स्वच्छता, सात्विकता आदि महत्वपूर्ण मूल्यों की व्याख्या हुई है। गुरु जम्भेश्वर ने शास्त्रीय ज्ञान और पुस्तकीय ज्ञान की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि वेद, उपनिषद, पुराण, गीता, महाभारत आदि ग्रन्थ सारहीन नहीं हैं बल्कि उनके चिन्तन और मनन करने से सार प्राप्त किया जा सकता है।

जाम्भोजी द्वारा कहे गये शब्दों का नाम सबदवाणी है। इसे जम्भवाणी भी कहते हैं। जम्भवाणी का लक्ष्य कर्मशीलता, आत्मज्ञान और लोकमंगल है। वह मानव को जड़ता, सुसंस्कार, अज्ञान और भ्रम से मुक्त कराकर उसको ऊँचा उठाती है।

बिश्नोई पंथ परम्परा गुरुवाणी को वेदवाणी के रूप में स्वीकार किया जाता है। कुछ कवियों ने इसको पांचवा वेद माना है।

पाँचवो वेद सांभलि सबद, च्यार वेद हुंता चलु।
केवली झंम सावल कवल, आज साच पायो अलू॥

-अलु कविया

गुरु पांचवो वेद पढ़ै मुख प्रकट सो गुरुवाणी सांभलियो।

-गोकलजी

-**आशिमा बिश्नोई,** शोधार्थी (शिक्षा विभाग)
जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुन्झुनू (राज.)
रजि. 19415050

बधाई सन्देश

विजय खोखर सुपुत्र श्री छगन सिंह खोखर, निवासी तिलवासनी, जिला जोधपुर ने भारतीय सिविल सर्विसिज परीक्षा 2014 में 805 रैंक प्राप्त कर चयनित हुए हैं।

अभिजीत सुपुत्र श्री राकेश बिश्नोई निवासी चाऊ की बस्ती, जिला मुरादाबाद का चयन शारीरिक विज्ञान में जूनियर रिसर्च फेलोशिप के लिए हुआ है।।

गौरिका बिश्नोई सुपुत्री श्री ललित कुमार व श्रीमती पूनम बिश्नोई, निवासी 98पी, सेक्टर 45, गुड़गांव ने IGU Northern India Juniors में प्रथम स्थान, एशियन गेम्स ट्रायल में पांचवी रैंक प्राप्त की है। आपका चयन 2016 में चीन में आयोजित होने वाली FALDO SERIS Asia Grand Final के लिए हुआ है। गौरिका बिश्नोई अब तक देश-विदेश में गोल्फ की एक दर्जन से अधिक प्रतियोगिताएं जीत चुकी है।

विश्वराज बिश्नोई सुपुत्र श्री विवेक कुमार बिश्नोई निवासी बिजनौर (उ.प्र.) का चयन आइपीसीएल सीजन-6 (क्रिकेट 20-20 लीग द्वारा इंडियन 20-20 क्रिकेट फेडरेशन) 2015 टीम में हुआ है।

दिव्य तेज बिश्नोई सुपुत्र श्री अनुराग बिश्नोई, निवासी जोधपुर ने राज्य स्तरीय सब-जूनियर बॉक्सिंग प्रतियोगिता में रजत पदक प्राप्त किया है। अगले माह उदयपुर में होने वाली जूनियर बॉक्सिंग प्रतियोगिता में चयन हुआ है।

अनिका बिश्नोई सुपुत्री श्री अखलेश बिश्नोई, निवासी हिल व्यू गार्डन, त्रेहान भिवाड़ी, जिला अलवर ने नेशनल साईंस ओलम्पियाड प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।

किरण सुपुत्री श्री कुलदीप गोदारा, निवासी रावतखेड़ा, जिला हिसार ने दिल्ली में 28 से 31 दिसंबर तक आयोजित राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।

सनहित बिश्नोई सुपुत्र श्री ललित कुमार व श्रीमती पूनम बिश्नोई, निवासी 98पी, सेक्टर 45, गुड़गांव ने एशियन गेम्स ट्रायल में बी श्रेणी में तीसरी रैंक प्राप्त की है व राष्ट्रीय टीम में स्थान प्राप्त किया है।

निखिल सुपुत्र श्री प्रदीप डुडी, निवासी गांव कालवास, हाल निवास बिश्नोई कालोनी, हिसार का चयन अन्डर-17 आई फुटबाल व साई सैंटर, हिसार की फुटबाल टीम में हुआ है।

श्री श्यामसिंह बिश्नोई (GTI-Indian Air Force) सुपुत्र श्री श्रीराम सोऊ निवासी रामड़ावास धाम हाल निवास बैंक कॉलोनी, राईका बाग, जोधपुर को 'सेना अध्यक्ष प्रशंसा पुरस्कार' से जनरल दलवीर सिंह (PVSM UYSM AVSM VSM ADC Chief of the Army) द्वारा 19 दिसम्बर, 2015 को मैडल प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्री श्यामसिंह को एयर मार्शल जीपी सिंह (VM Commandant, AFA) द्वारा 4 दिसम्बर, 2015 को Awarded Commandant's Trophy Best Groung Training Instructor पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की ढेरों शुभकामनाएं।

मां की ममता

जब आंख खुली तो अम्मा की
गोदी का एक सहारा था
उसका नन्हा सा आंचल मुझको
भूमण्डल से प्यारा था
उसके चेहरे की झलक देख
चेहरा फूलों सा खिलता था
उसके स्तन की एक बूंद से
मुझको जीवन मिलता था
हाथों से बालों को नोंचा
पैरों से खूब प्रहार किया
फिर भी उस मां ने पुचकारा
हमको जी भर के प्यार किया
मैं उसका राजा बेटा था
वो आंख का तारा कहती थी
मैं बनूं बुढ़ापे में उसका
बस एक सहारा कहती थी
उंगली को पकड़ चलाया था
पढ़ने विद्यालय भेजा था
मेरी नादानी को भी निज
अंतर में सदा सहेजा था
मेरे सारे प्रश्नों का वो
फौरन जवाब बन जाती थी
मेरी राहों के कांटे चुन
वो खुद गुलाब बन जाती थी
मैं बडा हुआ तो कॉलेज से
इक रोग प्यार का ले आया
जिस दिल में मां की मूरत थी
वो रामकली को दे आया
शादी की पति से बाप बना
अपने रिश्तों में झूल गया
अब करवाचौथ मनाता हूँ
मां की ममता को भूल गया
हम भूल गये उसकी ममता
मेरे जीवन की थाती थी
हम भूल गये अपना जीवन
वो अमृत वाली छाती थी
हम भूल गये वो खुद भूखी
रह करके हमें खिलाती थी
हमको सूखा बिस्तर देकर
खुद गीले में सो जाती थी
हम भूल गये उसे ही
होठों को भाषा सिखलायी थी
मेरी नीदों के लिए रात भर
उसने लोरी गायी थी
हम भूल गये हर गलती पर
उसने डांटा समझाया था
बच जाउं बुरी नजर से
काला टीका सदा लगाया था
हम बड़े हुए तो ममता वाले
सारे बन्धन तोड़ आए
बंगले में कुत्ते पाल लिए
मां को वृद्धाश्रम छोड़ आए
उसके सपनों का महल गिरा कर
कंकर-कंकर बीन लिए
खुदगर्जी में उसके सुहाग के
आभूषण तक छीन लिए
हम मां को घर के बंटवारे की
अभिलाषा तक ले आए
उसको पावन मंदिर से
गाली की भाषा तक ले आए
मां की ममता को देख मौत भी
आगे से हट जाती है
गर मां अपमानित होती
धरती की छाती फट जाती है
घर को पूरा जीवन देकर
बेचारी मां क्या पाती है
रूखा सूखा खा लेती है
पानी पीकर सो जाती है
जो मां जैसी देवी घर के
मंदिर में नहीं रख सकते हैं
वो लाखों पुण्य भले कर लें
इंसान नहीं बन सकते हैं
मां जिसको भी जल दे दे
वो पौधा संदल बन जाता है
मां के चरणों को छूकर पानी
गंगाजल बन जाता है
मां के आंचल ने युगों-युगों से
भगवानों को पाला है
मां के चरणों में जन्नत है
गिरिजाघर और शिवालया है
हिमगिरि जैसी उंचाई है
सागर जैसी गहराई है
दुनियां में जितनी खुशबू है
मां के आंचल से आई है
मां कबिरा की साखी जैसी
मां तुलसी की चौपाई है
मीराबाई की पदावली
खुसरो की अमर रूबाई है
मां आंगन की तुलसी जैसी
पावन बरगद की छाया है
मां वेद ऋचाओं की गरिमा
मां महाकाव्यं की काया है
मां मानसरोवर ममता का
मां गोमुख की उंचाई है
मां परिवारों का संगम है
मां रिश्तों की गहराई है
मां हरी दूब है धरती की
मां केसर वाली क्यारी है
मां की उपमा केवल मां है
मां हर घर की फुलवारी है
सातों सुर नर्तन करते जब
कोई मां लोरी गाती है
मां जिस रोटी को छू लेती है
वो प्रसाद बन जाती है
मां हंसती है तो धरती का
जर्रा-जर्रा मुस्काता है
देखो तो दूर क्षितिज अंबर
धरती को शीश झुकाता है
माना मेरे घर की दीवारों में
चन्दा सी मूरत है
पर मेरे मन के मंदिर में
बस केवल मां की मूरत है
मां सरस्वती लक्ष्मी दुर्गा
अनुसूया मरियम सीता है
मां पावनता में रामचरित
मानस है भगवत गीता है
अम्मा तेरी हर बात मुझे
वरदान से बढ़कर लगती है
हे मां तेरी सूरत मुझको
भगवान से बढ़कर लगती है
सारे तीरथ के पुण्य जहां
मैं उन चरणों में लेटा हूं
जिनके कोई सन्तांन नहीं
मैं उन मांओं का बेटा हूं
हर घर में मां की पूजा हो
ऐसा संकल्प उठाता हूं
मैं दुनियां की हर मां के
चरणों में ये शीश झुकाता हूं...

-शैलजा, कमला नगर, हिसार

सुरजनजी कृत हरजस (राग विळावल)

आपणां सांई आपमां, कस्य देखौ काया।
तीरथ वरत अचार है, सतगुरु की माया॥1॥ टेक॥

सकळ वियापी एक है, करि लीजो दाया।
दरपण मां मुष देखि ले, गुर ग्यान बताया॥2॥
तिल मां तेल पोहप मां, रस बास समाया।
प्रेम जतन ता ऊपजै, उपदेस लखाया॥3॥
दीन गरीबी बंदगी, भजीयै एक धारा।
पर उपगार विचारीयै, करिये प्रेम पियारा॥4॥
एक रीझावै राग तै, एक रूप रीझाया।
सभ का सांई साच मां, गुर ग्यान बताया॥5॥
भ्रम चक्र तै ऊपजै, संभल्य गुर भाई।
मोह चक्र की गांठि मां, जुग बंध्यौ जाई॥6॥
मन्यसा वाचा क्रमना, रहणी एक धारा।
जन सुरजन की वीनती, भज्य उतरौ पारा॥7॥

हे प्राणी तुम्हारा परमात्मा तुम्हारे में ही है, इस शरीर को कसोटी पर कसकर देखो। तीर्थ, व्रत, आचार ये सब माया है, इनसे सतगुरु नहीं मिलता है। ईश्वर सर्वव्यापक और एक है, उसे पहचानो। जैसे दर्पण में स्वयं का मुख ही दिखता है, उसी प्रकार गुरु के ज्ञान से शरीर में परमात्मा के दर्शन होते हैं। जिस प्रकार तिल में तेल, पुष्प में सुगन्धी और रस विद्यमान है, इस प्रकार परमात्मा को प्रेम के यत्न से पाया जा सकता है, यही गुरु का उपदेश है। गरीबों की सेवा, विष्णु का स्मरण, दूसरों की भलाई और प्रेम करें, यही सच्चा उपदेश है। कोई ईश्वर को राग से, कोई उसे रूप से प्रसन्न करता है परन्तु सबका परमात्मा तो सत्य में है, ऐसा गुरु ने ज्ञान दिया है। हे गुरु भाई सुनो, भ्रम चक्र से सब विकार उत्पन्न होते हैं और मोह माया के चक्र में सब संसार बधा हुआ है। कवि सुरजनजी कहते हैं कि मन, वचन, कर्म से शुद्ध रहो और विष्णु भगवान का भजन करके, इस भवसागर से पार उतरो।

हरजस गुढारथ (राग मलार)

अब जो चंद मुराळ्य चात्रग, कौकिल कीर कुरंग लिपटाए।
कंचन ताळ बाळ फुंनग फुन पांवन, कसै कवळ वदंन विगसाय॥1॥टेक॥
जाकै मुकट कोटि निज सोभा, सो मोहि आज करत दिल दूजी।
जळरी परी पकौ तारेप, तस असवार मात गति पूजो॥2॥
एक राह इकवीस डगर सग्य, रीण नेत मां जात।
अरज राधा अब नंदन, कहो करि सूं बात॥3॥
त्रकुटी आग त बंध प्रीतम, तस होत वर कुलीन।
षट दुंण सारंग वेनां सारंग, सभ होत आज मलीन॥4॥
मैन सुता पति वाहन के वाहंन, ता वाहंन अरज सुनाऊं।
कुंकुमम को पालन परसुं, मंम नैन को अंक बहाऊं॥5॥
ध्रुत सुता नांव के नंदन, ताको प्रीतम मारग्य बहाऊं।
अबज मील नदन को नंदन, ताको प्रीतम मारग्य बहांऊं॥6॥
लोयण चंद चिकौर मीन जळ, जळहरे खंडत रसनां गायो।
सुरजनदास आस हरि पूरवै, रहोये चरण कंवळ लिपटायौ॥7॥

चंद, हंस, पपीहा, कोयल, तोता, मृग ये सब एक स्थान में हैं। सोना, सर्प, कमल ये सब स्त्री के शरीर में शोभायमान हैं, इन्हीं को श्रृंगार कहते हैं। (राधा का वर्णन है) जिनके करोड़ों मुकुट शोभायमान हैं, वह कृष्ण भगवान मेरे से दिल चुराते हैं। जैसे बादलों का प्रेमी मोर और मोर का सवार श्याम कार्तिक (शंकर का पुत्र) है, जिनकी माता पार्वती है। पार्वती ने सीता का स्वरूप धारण किया था, इस कारण शंकर भगवान ने उनका त्याग कर दिया था, उस समय जो गति पार्वती की हुई थी, राधा कहती है-अब मेरी वही गति है। मुख्य रास्ता एक है लेकिन छोटे-छोटे अनेक रास्ते हैं, यह रात्रि मुझे एक युग के समान लगती है। अब राधा विनय करती है-हे कृष्ण, अब आप विमुख मत रहो। हे प्रीतम, जो स्त्री को जीवन भर निभाता है, वही वर श्रेष्ठ कुल का होता है, मेरा चीर और काजल आपके न आने से मलीन हो गए हैं। राधा कहती है कि मेरा सोना नहीं होता, मैं कुकुम का स्पर्श नहीं करूंगी, आंसुओं के जल से मैं मेरे नैनों का काजल बहाऊंगी। राधा अपने मन में ऐसा सोचती है, कागज में उन्हें स्नेह के सबद लिखूं और कपट को दूर हटाऊं, हे नन्द के पुत्र, कृष्ण, अब मुझे मिला, मेरी सौत कोई हो तो उसे दूर करो। जैसे चकोर चन्द्रमा को और मच्छली जल को चाहती है, ऐसे मेरी आंखों में आपके लिए प्रेम है, मेरी जिभ्या भगवान के नाम का उच्चारण करती है, सुरजनदास जी कहते हैं कि हे भगवान, मेरी आशा की पूर्ति करो और मुझे अपने चरणों में शरण दो।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बिश्नोई लोकगीत

पीळो

गांव धणी आगे साहेबा अरज करोनी,
दो बीघा धरती देरावो गाडा मारूजी।
सोनै रुपैगा दो हळिया घड़ाओ,
करड़ कसुम्बो बीजावो गाडा मारूजी।
सोनै रुपैगा दो खुरपा घड़ाओ,
करड़ कसुम्बो निनाणों गाडा मारूजी।
बीकाणै गी साहेबा कुंडी मंगाओ,
दिल्ली सहर सू घोटा राडा मारूजी।
आमै सामै दो मरद बिसाणों,
करड़ कसुम्बो घोटावो गाडा मारूजी।
दिल्ली सहर सूं साहेबा पोत मंगाओ,
जच्चा नै पीळो रंगाओ गाडा मारूजी।
दिल्ली सहर सूं साहेबा गोटा मंगाओ,
जच्चा नै पीळो जड़ावो गाडा मारूजी।
एड़ै छेड़ै तो साहेबा मोर पपहीया,
बीच में चांदी गो चांद कुराओ गाडा मारूजी।
पीळो तो ओढ़ जच्चा जळु तो लीनो,
जोसीड़ै पीळो सहरायो गाडा मारूजी।
पीळो रंगा द्यो॥
पीळो तो ओढ़ जच्चा रसोई में गई,
सासु नणद मुख मोड़्यो गाडा मारूजी।पीळो.॥
थे सासु बडेरो क्यूं मुख मोड़्यो,
पीळो तो म्हानै रामइय उढ़ायो गाडा मारूजी।पीळो.॥
पीळो तो ओढ जच्चा महला पधारी,
लाल पड़ोसन नजर लगाई गाडा मारूजी।पीळो.॥
आँख न खोलै, मुखड़ै न बोलै,
ना बालकिय नै बोबो देवै गाडा मारूजी।पीळो.॥
दिल्ली सहर सूं साहिबा बेद बुलाओ,
जच्चा गी नाड़ दिखाओ, गाडा मारूजी।पीळो.॥
नाड़ दिखाळी गा पांच रिपिया,
मुखड़ै बोली गा मोहरा लेस्यां गाडा मारूजी।पीळो.॥
आँख जै खोली जच्चा, मुखड़ै जी बोली,
बाळकिय नै बोबो दियो गाडा मारूजी।पीळो.॥
तूं बेदगा लड़का बहुत ठगारो,
ठग लिनो भोळै स बालम नै गाडा मारूजी।पीळो.॥
तूं ए साजन की जायी, बहुत छळगारी,
छळ कर बेद बुलायो गाडा मारूजी।पीळो.॥

अजवाण

थे म्हारा गाडा मारूजी नोकरड़ी सिधारिया, चाकरड़ी सिधारिया।
जच्चा राणी नै अजवाण कुणा जी मुलायसी ओ राज ?
थे तो म्हारी भाइया प्यारी धीनड़िया खिलावो, बाळकियो खिलावो।
अजवाण म्हारो बाबोजी मुलायसी ओ राज॥
थारै रे बाबाजी गो साहेबा किसोड़ो भरोसो,
बीस गी मुलावै बै पच्चीस गी बतावै।
जच्चा राणी रो मनड़ो न मानै ओ राज॥
थे म्हारा गाडा मारूजी नोकरड़ी सिधारिया, चाकरड़ी सिधारिया।
जच्चा राणी नै अजवाण कुणाजी छांटै ओ राज ?
थे तो म्हारी भाइयां प्यारी धीनड़ियां खिलावो, बाळकियो खिलावो।
अजवाण म्हारी माताजी छांटै ओ राज॥
थारी रे माताजी गो साहेबा किसोड़ो भरोसो,
कीं कूटता खिंडावै, कीं छाणता खिंडावै।
जच्चा राणी गो मनड़ो न मानै ओ राज॥
थे म्हारा गाडा मारूजी नोकरड़ी सिधारिया, चाकरड़ी सिधारिया।
जच्चा राणी नै अजवाण कुणा जी पीसै ओ राज ?
थे तो म्हारी मृगा नयणी धीनड़िया खिलावो, बाळकियो खिलावो।
अजवाण म्हारी भाभी जी पीसै ओ राज॥
थारी भाभी जी गो साहेबा किसोड़ो भरोसो, की पीसतां खिंडावै, कीं उदाळता खिंडावै।
जच्चा राणी रो मनड़ो न मानै ओ राज॥
थे म्हारा गाडा मारूजी नोकरड़ी सिधारिया, चाकरड़ी सिधारिया।
जच्चा राणी नै अजवाण कुणा जी सांदै ओ राज ?
थे तो म्हारी भाइया प्यारी धीनड़िया खिलावो, बाळकियो खिलावो।
अजवाण म्हारी भुआजी सांदै ओ राज॥
थारी भुआ जी गो साहेबा किसोड़ो भरोसो
कीं सांदता ही जीमैं, कीं लाड्डू बांधता ही जीमै।
जच्चा राणी रो मनड़ो न मानै ओ राज॥
थे म्हारा गाडा मारूजी नोकरड़ी सिधारिया, चाकरड़ी सिधारिया।
जच्चा राणी नै लाड्डू कुणा जी झलावै, ओ राज ?
थे तो म्हारी भाइया प्यारी धीनड़िया खिलावो, बाळकियो खिलावो।
लाड्डू म्हारी बाई जी झलावै, ओ राज॥
थारी बाई जी गो साहेबा किसोड़ो भरोसो, कीं लावन्दी जीमै, कीं देवन्दी जीमै।
जच्चा राणी रो मनड़ो न मानै ओ राज॥

साभार- बिश्नोई लोकगीत

पर्यावरण प्रदूषण: स्वरूप व परिणाम

पर्यावरण प्रदूषण के कारण ही पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। इस ताप का प्रभाव ध्वनि की गति पर भी पड़ता है। तापमान में एक डिग्री सेल्सियस ताप बढ़ने पर ध्वनि की गति लगभग साठ सेंटीमीटर प्रति सेकेंड बढ़ जाती है। आज हर ध्वनि की गति तीव्र है और श्रवण शक्ति का ह्रास हो रहा है। यही कारण है कि आज बहुत दूर से घोड़ों के टापों की आवाज जमीन पर कान लगाकर नहीं सुनी जा सकती। जबकि प्राचीनकाल में राजाओं की सेना इस तकनीक का प्रयोग करती थी।

बढ़ते उद्योगों, महानगरों के विस्तार तथा सड़कों पर बढ़ते वाहनों के बोझ ने हमारे समक्ष कई तरह की समस्या खड़ी कर दी है। इनमें सबसे भयंकर समस्या है प्रदूषण। इससे हमारा पर्यावरण संतुलन तो बिगड़ ही रहा है साथ ही यह प्रकृति प्रदत्त वायु व जल को भी दूषित कर रहा है। पर्यावरण में प्रदूषण कई प्रकार के हैं। इनमें मुख्य रूप से ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण शामिल हैं। इनसे हमारा सामाजिक जीवन प्रभावित होने लगा है। तरह-तरह के रोग उत्पन्न होने लगे हैं।

औद्योगिक संस्थाओं को कूड़ा-करकट रासायनिक द्रव्य व इनसे निकलने वाला अवजल नाली-नालों से होते हुए नदियों में गिर रहे हैं। इसके अतिरिक्त अंत्येष्टि के अवशेष तथा छोटे बच्चों के शवों को नदी में बहाने की प्रथा है। इनके परिणामस्वरूप नदी का पानी दूषित हो जाता है। हालांकि नदी के इस जल को वैज्ञानिक तरीके से शोधित कर पेय जल बनाया जाता है। लेकिन इस कथित शुद्ध जल के उपयोग से कई प्रकार के विकार उत्पन्न हो रहे हैं। इनमें खाद्य विषाक्तता तथा चर्म रोग प्रमुख हैं। प्रदूषित जल मानव जीवन को ही नहीं कई अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित करता है। इससे कृषि क्षेत्र भी अछूता नहीं है। प्रदूषित जल से खेतों में सिंचाई करने के कारण उनमें उत्पन्न होने वाले खाद्य पदार्थों की शुद्धता व उसके अन्य पक्षों पर भी उसका दुष्प्रभाव पड़ता है।

शुद्ध वायु जीवित रहने के साथ-साथ हमारे जीवन के लिए आवश्यक है। शुद्ध वायु का स्रोत वन, हरे-भरे बाग व लहलहाते पेड़-पौधे हैं क्योंकि यह जहां प्रदूषण के भक्षक हैं वहीं यह हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण आवास की समस्या उत्पन्न होने लग रही है। मानव ने अपनी आवासीय पूर्ति के लिए वन क्षेत्रों और वृक्षों का भारी मात्रा में दोहन किया। इसके अलावा हरित पट्टियों पर कंकरीट के जाल रूपी सड़कें बिछा दी हैं। इस कारण हमें शुद्ध वायु नहीं मिल पा रही। इसके अतिरिक्त कारखानों से निकलने वाली विषैली गैसें, धुंआ, कूड़े-कचरों से उत्पन्न गैस वायु को प्रदूषित कर रही है। रही सही कसर पेट्रोलियम पदार्थ से चलने वाले वाहनों ने पूरी कर दी है। स्कूटर, मोटरसाइकिल, कार, बस, ट्रक आदि वाहन दिन-रात सड़कों पर दौड़ रहे हैं। इनसे जो धुंआ निकलता है उसमें कार्बन-डाइ-ऑक्साइड, सल्फ्यूरिक ऐसिड और शीशे के तत्व शामिल होते हैं, जो हमारे वायुमंडल में घुलकर उसे प्रदूषित करते हैं। वायु प्रदूषण से श्वास सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते हैं। इसके अलावा यह हमारे नेत्रों व त्वचा को भी प्रभावित करती है।

हमारे वातावरण में मनुष्य की ध्वनि के अतिरिक्त प्रकृति और प्राकृतिक वातावरण से सुनाई देने वाली भी कुछ ध्वनियां हैं। पक्षियों के चहचहाने, पत्तों का टकराने, बादलों और समुद्र की हल्की गर्जना आदि से भी ध्वनि उत्पन्न होती है। इन ध्वनियों को प्रकृति का संगीत मानकर उनका आनन्द लिया जाता है। लेकिन यही ध्वनियां जब तेज हो उठती हैं तो कानों को चुभने लगती हैं। तेज ध्वनि से कानों के पर्दे फट जाने और व्यक्ति के बहरा हो जाने का भय होता है। इस भयप्रद ध्वनियों के प्रभाव को वास्तव में ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है।

बड़े शहरों के खुल वातावरण में तीस डेसीबल का शोर हर समय रहता है। कभी-कभी यह पचास से डेढ़ सौ डेसीबल तक बढ़ जाता है। पहले प्राय: चिड़ियों की चहचहाट से नींद खुलती थी लेकिन अब मोटर वाहनों की शोरगुल से नींद खुलती है। ध्वनि प्रदूषण कानों की श्रवण शक्ति के लिए तो हानिकारक है ही, साथ ही यह तन-मन की शान्ति को भी प्रभावित करता है। ध्वनि प्रदूषण के कारण मानव चिड़चिड़ा और असहिष्णु हो जाता है। इसके अलावा अन्य कई विकार पैदा होने लगते हैं।

हमें प्रदूषण से बचने के लिए हरित क्षेत्र विकसित करना होगा। इसके अतिरिक्त आवासीय क्षेत्रों में चल रही औद्योगिक इकाइयों को वहां से स्थानांतरित कर इन इकाइयों से निकलने वाले कचरे को जलाकर नष्ट करने जैसे कुछ उपाय अपनाकर प्रदूषण पर कुछ हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है।

-हरिनारायण भादू

गांव रोड़ा, तह. नोखा, जिला बीकानेर

साचा बिश्नोई मिळेला

कठै रामायण पुराण,
वेद 'ज कहाणी में !
साचा बिश्नोई मिळेला,
जम्भेश्वर वाणी में !!
जठै घणा 'ह रुंख हरा,
हैं हिरण तणों हेत !
साचा बिश्नोई मिळेला,
खेजड़ियां रे खेत !!
प्रभात री पौर रा 'ह,
(सब)तकड़ा नहावण में !!
साचा बिश्नोई मिळेला,
(गुरु री) जोत 'ज जगावण में !!
तीस दिन सूतक राखे,
पंच रितु धरम भला !
साचा बिश्नोई मिळेला,
पाक पकावण कला !!
भले न नहावे गंगा,
हर री पौड़ी ना नाम !
साचा बिश्नोई मिळेला,
जांभोलाव ' ज धाम !!
काला नीला काबरा,
वस्त्र नहीं संवारे !
साचा बिश्नोई मिळेला
धोळा कपड़ा धारे !!
रखे न 'ह ढाल तलवार,
भले न रखे भाला !
साचा बिश्नोई मिळेला,
जीव रुंख रुखाला !!
रामासड़ी तिलवाणी,
धिन 'ह पोलास गाम !
साचा बिश्नोई मिळेला ,
खेजड़ली रे धाम !!
भूत भोमिया जगत में,
राफळ करत धूजे ,
साचा बिश्नोई मिळेला,
आंण देव न पूजे !!
पिवे छाछ अर राबड़ी,
काम खेत भरपूर !
साचा बिश्नोई मिळेला ,
सदा नशे सूं दूर !!
हर गांव हरी कथा कर,
जेब भरे भरपूर !
साचा बिश्नोई (संत)मिळेला,
धन माया सूं दूर !!
कह' बंशी कविराय,
धरम गुणतीस रो सार !
साचा बिश्नोई मिळेला,
चलत पंथ री धार !!

-बंसीलाल ढाका
गांव ढाकों का गोलिया
(कबूली), बाड़मेर (राज.)

भजन गुरुवर

कभी शीशा कभी दरिया, कभी बरगद बने गुरुवर,
जरा सी जिन्दगी में तुमने, कितने रंग दिये गुरुवर।
कभी शीशा......
कभी हमने किसी मुश्किल को मुश्किल ही नहीं जाना,
हमारी मुश्किलों हल सदा तुमने किया गुरुवर।
कभी शीशा......
अगर हम भटके राहों में, तो इतना जानते हम,
जगत की सारी राहों से बचा लोगे मेरे गुरुवर।
कभी शीशा......
जरा सी वस्तु पर जब भी मचलता है कोई शिष्य,
गरीबी और उसकी बेबसी को देखते गुरुवर।
कभी शीशा......
हमेशा ही उन्हें बरसात का छाता बना देखा,
हमेशा अपने शिष्यों के लिए जीते रहे गुरुवर।
कभी शीशा......
अपनी मुश्किलों से हम सदा अनजान है लेकिन
जमाने भर की सब खुशियां तुम्हीं से देखते गुरुवर।
कभी शीशा......
मेरी राहों के दीपक हो, मेरी सम्बल मेरी ताकत,
मुझे अभिमान है तुम पर जो तुम मुझको मिले गुरुवर।
कभी शीशा......

-ब्यूटी बिश्नोई पुत्री सुभाषचन्द्र
सुल्तानपुर खद्दर, कांठ
मुरादाबाद (यूपी)

सर्दियों में स्वस्थ रहने के घरेलू उपाय

सर्दी का मौसम सेहत के लिहाज से बेहतरीन मौसम माना जाता है। इस समय पाचन शक्ति अच्छी रहती है, भूख भी अच्छी लगती है, खाया-पीया अच्छे से हजम हो जाता है, रातें लम्बी होती हैं, जिससे आराम करने को भी पर्याप्त समय मिल जाता है, जिस प्रकार एक व्यापारी व्यापार के सीजन में खूब मेहनत करके पर्याप्त धन अर्जित कर लेता है और फिर वर्ष के शेष समय में कम आय होने के बावजूद आराम से जीवन-यापन कर पाता है, उसी प्रकार हमें शीत ऋतु में पौष्टिक आहार एवं व्यायाम, योगा आदि के द्वारा पर्याप्त बल एवं शक्ति अर्जित कर लेनी चाहिए, ताकि वर्ष पर्यन्त स्वस्थ रह सकें।

सर्दियों में इन बातों पर ध्यान दें :

पौष्टिक पदार्थ लें- इस समय पाचकाग्नि तीव्र होती है, भूखे रहना नुकसानदायक होता है। इस दौरान घी, मक्खन, उड़द की दाल, गाजर का हलवा, गोंद के लड्डू, तिल के लड्डू, च्यवनप्राश, बादाम पाक, मूंगफली, गुड़ पपड़ी जैसे बल एवं शक्तिवर्धक पदार्थों का सेवन करना बेहतर रहता है।

मेवा (ड्राई फ्रूट्स) खायें- बादाम, काजू, पिस्ता, किशमिश, अखरोट, मूंगफली ये सब पोषक तत्वों से भरपूर हैं। विटामिन, खनिज लवण एवं एंटी ऑक्सीडेंट तत्वों का भंडार हैं, इनका सर्दी के मौसम में सेवन करना सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है साथ ही दूध, दही, छाछ का नियमित सेवन शरीर के लिए अत्यंत लाभदायक होता है, शीत ऋतु में मक्का, बाजरे की रोटी, घी, मक्खन, गुड़ के साथ सेवन करना स्वादिष्ट एवं गुणकारी होता है।

मौसमी फल एवं हरी सब्जियाँ खाएं- अनार, आँवला, सेब, संतरा, अमरुद जैसे फल एवं गाजर, मूली, पालक, शकरकंद, गोभी, टमाटर, मटर जैसी सब्जियों में विटामिन, खनिज लवण एवं फाइबर प्रचुर मात्रा में होते हैं, जिससे ये फल एवं सब्जियां सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होती हैं।

शारीरिक रूप से सक्रिय रहें- शीत ऋतु के दौरान भारी पदार्थों का सेवन ज्यादा किया जाता है तथा रातें लम्बी होने के कारण शरीर को आराम भी ज्यादा मिलता है, इस वजह से शरीर का वजन बढ़ने की पूरी सम्भावना रहती है, इसलिए व्यायाम, योगा आदि का नियमित रूप से अभ्यास करना चाहिए, सुबह उठकर पार्क आदि में घूमने जायें, तेज कदमों से चलें या दौड़ लगाएं, इन उपायों से शरीर से पसीने के रूप में हानिकारक तत्व बाहर निकल जाते हैं, शरीर का रक्त संचार बढ़ता है, तन-मन स्वस्थ रहता है तथा जरूरत से ज्यादा वजन भी नहीं बढ़ पाता एवं शरीर की अंदरूनी शक्ति का विकास होता है।

मालिश करें- सुबह भ्रमण से आने के बाद हो सके तो कुछ देर सूर्य की धूप में बैठ कर सरसों, बादाम आदि के तेल से मालिश करें सूरज की किरणों से विटामिन डी मिलता है जो कि हड्डियों की मजबूती एवं ताकत के लिए बहुत जरूरी होता है। मालिश से स्वास्थ्य सुधरता है, त्वचा की कान्ति निखरती है। शीत ऋतु में वातावरण में रुक्षता होती है जिससे त्वचा एवं होंठ आदि फटने लगते हैं, त्वचा रूखी हो जाती है, मालिश करने से त्वचा में चिकनापन आता है, मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं, शरीर में खून का दौरा सुचारू रूप से चलता है, शरीर सुन्दर एवं सुगठित हो जाता है। इसलिए नित्य मालिश अवश्य करें।

पानी पीने में आलस्य ना करें- सर्दी में अधिकतर लोग पानी पीने में आलस्य करते हैं या यूँ कहें कि प्यास ही कम लगती है, जिससे शरीर में पानी की कमी हो जाती है, त्वचा फटने लगती है, कमजोरी आ सकती है, इसलिए दिन भर में 7-8 गिलास पानी अवश्य पीएं। सर्दी में चाहें तो पानी गुनगुना करके पी सकते हैं, मोटापा कम करने के लिए सुबह-सुबह भूखे पेट एक गिलास गुनगुने जल में एक नींबू का रस एवं एक चम्मच शहद डाल कर पीयें।

शीत ऋतु में बीमारियों से करें बचाव- सर्दी में ठंडी

चीजें जैसे आइस क्रीम, ठन्डे पेय एवं बासी भोजन का सेवन ना करें, ज्यादा ठण्ड होने पर अच्छी तरह गरम कपड़े पहन-ओढ़ कर ही बाहर निकलें। विशेष रूप से बच्चे, बूढ़े लोग एवं औरतें खास ध्यान रखें, तापमान के घटने से इस समय रक्त गाढ़ा हो जाता है। इसलिए डायबिटीज, उच्च्व रक्तचाप एवं हृदय रोगियों को अतिरिक्त सावधानी रखनी चाहिए।

सर्दी, जुकाम, खांसी होने पर निम्न घरेलु उपाय कर सकते हैं- एक गिलास गरम दूध में आधी चम्मच सोंठ पाउडर एवं चौथाई चम्मच हल्दी पाउडर डाल कर पीने से गले के दर्द, खांसी, जुकाम सर्दी में तुरंत आराम आ जाता है। सर्दी, जुकाम एवं नाक बंद होने पर नमक के पानी से गरारे करना तथा गरम पानी में विक्स जैसी दवा या कर्पूर धारा डाल कर भाप लेना बहुत फायदेमंद है।

बार-बार जुकाम होना, छींकें आना, नाक बंद होना यदि लगातार होता रहे तो साइनोसाइटिस, दमा, टॉन्सीलायटिस की सम्भावना बढ़ जाती है एवं इन्फेक्शन कान के परदे तक पहुँच जाता है, जिससे जब तक अंग्रेजी दवाइयाँ खाते हैं आराम रहता है, दवाइयाँ बंद करते ही प्रॉब्लम दोबारा शुरू हो जाती है या डॉक्टर ऑपरेशन के लिए बोल देते हैं। कई बार ऑपरेशन के बाद भी प्रॉब्लम दोबारा शुरू हो जाती है, ऐसी अवस्था में आयुर्वेद की दवायें लक्ष्मी विलास रस, बसंत मालती रस, सितोपलादि चूर्ण, कंटकारी अवलेह, गोजिव्ह्यादि, गोदन्ती, षड्बिन्दु आदि दवायें बहुत फायदेमंद होती हैं, इनका सेवन आयुर्वेद डॉक्टर की सलाह से ही करें।

-प्रमोद ऐचरा
व्यवस्थापक, अमर ज्योति पत्रिका, हिसार

बिश्नोई समाज की सामाजिक समरस्ता पर कुछ प्रश्न चिह्न प्रस्तुत हैं

हमारा बिश्नोई समाज जितनी बड़ी तादाद में पूरे हिन्दुस्तान में बसता है, जिसमें कुछ अमीर, कुछ मध्यम वर्ग और कुछ गरीब वर्ग हैं। बिश्नोई धर्म के निर्माता गुरु जम्भेश्वर भगवान ने अपनी दैवीय शक्ति से दुनिया में बिश्नोई समाज की पहचान बताई है। दुनिया के धर्माचार्यों को, राजा-महाराजाओं को बिश्नोई समाज से अवगत कराया। परन्तु पांच सौ वर्ष गुजरने के बाद भी सामाजिक समरसतापूर्ण रूप नहीं ले पाई है। अभी-भी बिश्नोइयों में बहुत विभिन्नताएँ हैं।

हमारा समाज आज भी ऐसे व्यक्तियों की बाट जोह रहा है। जो समाज को एक सूत्र में बांध सके। 1940 से 1980 के दशक तक बिश्नोई रत्न चौधरी भजनलाल जी ने अपनी कुशाग्र बुद्धि और राजनैतिक सूझबूझ से बिश्नोई समाज को एक पहचान दिलाने का भागीरथ प्रयास किया, जिसमें वे शत-प्रतिशत सफल भी रहे। परन्तु उनके जाने के बाद हमारी सामाजिक यात्रा ठहरी सी नजर आती है। क्या हम सब का कर्त्तव्य नहीं बनता कि हम जिन ऊँचाइयों तक पहुँच चुके हैं उन ऊचाँइयों को प्रगती की ओर अग्रसर करें।

इस कामयाबी को अग्रसर करने के लिए हमें बहुत गंभीरता से सोचना है। आपसी वैमनस्य के बजाए युग निर्माण मठ-मन्दिर निर्माण तथा अधूरे रह गए। निर्माणों को विशेष प्रयास कर सम्पूर्णता देना क्या हमारा धर्म नहीं है। जो लोग आज भी गुरु महाराज के उपदेशों से अछूते और अंजान है, उनको गुरु महाराज के उपदेशों से अवगत कराना क्या हमारा धर्म नहीं बनता ?

ये कुछ प्रश्न समाज की गहन सोच के लिए प्रस्तुत है। जिन पर बिश्नोई समाज को विचार करना है।

इसमें यदि कोई त्रुटि हुई हो तो क्षमा करें।

❒ **चंद्र भूषण बिश्नोई**, हरिद्वार
मो. 8950789729

अपील

सुधी लेखकों को सूचित किया जाता है कि महान जाम्भाणी संत कवि वील्होजी की 400वीं पुण्यतिथि के अवसर पर अमर ज्योति द्वारा अप्रैल 2016 का अंक 'वील्होजी अंक' के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। आपसे अनुरोध है कि वील्होजी के व्यक्तित्व व कृतित्व से सम्बंधित आलेख/शोध-पत्र/कविता/गीत/छन्द/दन्त कथा आदि 15 मार्च 2016 तक अमर ज्योति कार्यालय में भेजने की कृपा करे। आप अपनी सामग्री AAText फोंट में टाइप करके editor@amarjyotiptrika.com पर भी भेज सकते हैं।

कैरियर

प्रतिभा का विस्तार–सफलता का आधार

सफलता की कोई निश्चित परिभाषा नहीं होती, पर आमतौर पर अपने जीवन में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति ही सफलता कहलाती है। व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो पारिवारिक जीवन में शांति, रहने के लिए अच्छा घर, चलाने के लिए एक बढ़िया सी कार, परिवार के साथ व्यतीत करने के लिए पर्याप्त समय और खर्च करने के लिए पर्याप्त धन होने को ही सफलता समझा जाता है। शायद हम में से हर एक की यह इच्छा होती है। ज्यादातर लोगों की यह समस्या होती है कि सफल होने के लिए कौन–सा रास्ता अपनाया जाए? क्या कोई अच्छी सी नौकरी करके सफल बना जाये या फिर कोई व्यापार किया जाए। जरूरी नहीं है कि अगर एक रास्ते पर चलकर कोई व्यक्ति सफल हुआ है तो दूसरा भी उस रास्ते पर चलकर सफल ही होगा।

महान दार्शनिक सुकरात ने कहा है कि "जीवन का आनंद स्वयं को जानने में है"। स्वयं का निरीक्षण करना, अपनी प्रतिभा का पता लगाना और अपनी उस विशेष प्रतिभा का निरंतर विकास करना। वास्तव में यही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। आप अब तक सफल हुए लोगों में से किसी का भी इतिहास उठा कर देख लीजिए। उनमें एक बात समान है और वह यह है कि उन्होंने अपनी प्रतिभा को पहचाना और केवल उसी पर ध्यान दिया।

क्या है विशेष प्रतिभा या यूनिक टैलेंट?

प्रकृति ने हम सभी को अलग–अलग बनाया है। सभी एक दूसरे से भिन्न हैं और सभी के अन्दर एक विशेष गुण होता है। अपने अन्दर की विशेष योग्यता को समझने के लिए पहले जरूरी ये है कि हम यह जानें आखिर ये विशेष गुण या प्रतिभा क्या होती है? आइये, विशेष प्रतिभा के चारित्रिक गुणों को समझें। कोई ऐसा कार्य जो आप दूसरों की अपेक्षा अधिक निपुणता से करते हैं, यानि कि आपका टेलेंट। जिसे करने में आप कभी थकते नहीं और इसका भरपूर आनंद उठाते हैं।

हममें से ज्यादातर लोग अपनी योग्यताओं और प्रतिभाओं का विकास करने की बजाय उन्हें दबा देते हैं। अपने बचपन के दिन, आप में से कुछ लोगों को संगीत बहुत पसंद था, कुछ को चित्रकारी, कुछ को क्रिकेट खेलना और शायद कुछ को अभिनय करना। ऐसा नहीं है कि आपको सिर्फ ये पसंद ही था बल्कि कुछ ने तो इन क्षेत्रों में अवार्ड्स भी जीते। सभी लोग आपकी प्रशंसा करते थे और कहते थे कि तुम बड़े होकर इस क्षेत्र में बड़ा नाम करोगे। पर शायद समय के साथ हमने उन प्रतिभाओं को दबा दिया।

कैसे पहचानें अपने अन्दर छिपी हुई विशेष प्रतिभा को?

यदि आप अभी भी असमंजस की स्तिथि में हैं और अपनी प्रतिभा को नहीं पहचान पा रहे हैं, तो नीचे दी गयी प्रक्रिया को अपनाएं। यह आपको आपकी प्रतिभा पहचानने में मदद करेगी।

- ऐसे दस लोगों की लिस्ट बनायें जो आपको सही सलाह दे सकें और जिनकी सलाह का आप सम्मान करते हों। इन लोगों से पूछें कि उन्हें आपके अन्दर कौन–सी विशेष योग्यता दिखाई देती है।
- आप अपनी उन आदतों की लिस्ट बनायें जो आप किसी भी काम को बेहतरीन तरीके से करने के लिए प्रयोग करते हैं।
- अब आप ऊपर दी गयी प्रक्रियाओं का अवलोकन करें।
- एक लिस्ट बनायें कि आपके अन्दर कौन–कौन से गुण हैं और उन्हें करने के लिए आपको क्या प्रोत्साहित करता है।

क्या है जो आपको आगे बढ़ने से रोक रहा है?

वास्तविकता में अपनी प्रतिभा का पता लगाना ही पर्याप्त नहीं है। क्या कारण है कि लोगों को अपनी विशेषता का पता होते हुए भी वे उसका विकास नहीं कर पाते? इसके कुछ सामान्य कारण नीचे दिए गए हैं–

- अगर आप अपने कैरियर में आगे बढ़ चुके हैं तो इस बात का भय कि आपको नये सिरे से शुरुआत करनी पड़ेगी।
- क्या अपनी प्रतिभा वाले क्षेत्र में अपनी आजीविका कमा पाएंगे या नहीं?
- क्या एक नए क्षेत्र में कैरियर शुरू करने के लिए निवेश करने को तैयार हैं?
- क्या मैं अपनी पसंद के क्षेत्र में कामयाब हो पाऊँगा। अगर मैं सफल नहीं हो पाया तो लोग क्या कहेंगे कि अपना अच्छा भला काम छोड़कर नये क्षेत्र में जाने की जरूरत ही क्या थी?
- अपने वर्तमान सहकर्मियों का साथ छूट जाने का भय।

उपर्युक्त कुछ ऐसे कारण हैं कि जिनके चलते आपको यह पता होते हुए भी कि आप किस क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं, आप वह जोखिम उठाने को तैयार नहीं होते।

दोस्तो, जिन्दगी सिर्फ एक बार ही मिलती है। अगर आप चाहते हैं तो फिर जो आपका पैशन है उसे अपना प्रोफेशन बनाइए। शुरूआती दौर में शायद कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है, पर अंतत: आपका जीवन खुशियों से भरा हुआ होगा।

–प्रवीण कुमार सिंह

व्रत (उपवास) की महत्ता

भारतीय संस्कृति व चिंतन में व्रत (उपवास) की अत्यन्त महत्ता कही गई है। भारतीय मेधा और दर्शन के प्रतिनिधि ग्रन्थ गीता में भगवान श्रीकृष्ण जी अजुन से कहते हैं कि जो अमावस्या व्रत करता है उसके सब पाप भस्म हो जाते हैं। विष्णु अवतार गुरु जाम्भो प्रणीत बिश्नोई पंथ के 29 नियमों में एक नियम के रूप में 'अमावस्या व्रत' को रखने पर बल देकर अनुयायियों से यह अपेक्षा रखते हैं कि वे अमावस्या व्रत रखकर अपने तन-मन को स्वस्थ रखें क्योंकि स्वस्थ शरीर ही धर्म पालन में समर्थ हो सकता है। कहा भी गया है- **"शरीरंमाधम खलु धर्म साधनम्"** (मनुस्मृति) 'पोथे ग्रन्थ ज्ञान' में अमावस्या व्रत की महिमा का संदर्भ गीता जी से देते हुए कहा गया है-

'अर्जुन मावस व्रत जो करे, ताकै पाप सकल ही जरै।
ज्यूं वृक भेड़ अनेक विडारे, सूको काठ अग्न ज्यूं जारै॥[1]

अर्थात् अमावस्या व्रत रखने से सारे पाप भस्म हो जाते हैं। जिस प्रकार भेड़िया अनेक भेड़ों को खा जाता है तथा अग्नि सूखी लकड़ी को जला देती है। वस्तुत: मनुष्य को अपने तन-मन की शुद्धि के लिए किसी भी निमित्त व्रत अवश्य रखना चाहिए। मनुष्य शरीर भी एक मशीन की भांति है जिस प्रकार मशीन को भी आराम की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार मनुष्य को अपने पाचन तंत्र को आराम देने, मजबूत बनाने के लिए व्रत अवश्य रखना चाहिए। हाल ही में दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के अनुसंधान-कर्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला है कि कम समय का उपवास करने में कैंसर व अन्य खतरनाक बीमारियों से लड़ने की शक्ति मिलती है। भारतीय परम्परा यह मानती आई है कि तन-मन की शुद्धि के लिए व्रत आवश्यक है।

उपवास (व्रत) के शब्दिक अर्थ पर जाएं तो पता चलता है कि उप+वास अर्थात् समीप रहना। जिसमें ब्रह्मा की समीपता का बोध हो।[2] आचार्य चरक जी बताते हैं-

'प्राणीविरोधिना चैनं लधनेनोपपादयेत्।
बलाधिष्ठानमारोग्यं यदयोऽयं क्रियाक्रमः॥[3]

अर्थात् जितने दिन उपवास करने से व्यक्ति के बल का नाम न हो उतना ही उपवास करना चाहिए क्योंकि स्वस्थ रहना बल के ऊपर निर्भर करता है। शरीर को निरोग रखने के लिए उपवास किया जाता है। परन्तु साथ ही हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि कमजोर, वृद्ध, बीमार व गर्भवती स्त्रियों को उपवास नहीं रखना चाहिए।

उपवास के प्रकार[4] **:** आहार त्याग के आधार पर उपवास को दो वर्गों में विभाजित किया गया है- 1. निराहार, 2. फलाहार। इस प्रकार व्रत रखने वाले की शारीरिक व संकल्प क्षमता पर निर्भर करता है। वैसे निराहार व्रत को श्रेष्ठ माना जाता है। समय के आधार पर उपवास को दो भागों में बांटा गया है- 1. दिवस व्रत, 2. तिथि व्रत। जैसे अमावस्या को व्रत रखना तिथि व्रत की श्रेणी में आता है। उसी प्रकार किसी वार विशेष (सोम, मंगल और शुक्र आदि) को व्रत रखना दिवस व्रत कहलाएगा।

जांभाणी साहित्य में कहा गया है- 'इहि व्रत करत पाप सब नासे, हृदे उजल ज्ञान प्रकासै।' व्रत रखते समय शास्त्रोक्त नियमों का पालन अवश्य करना चाहिए जो इस प्रकार हैं-[5]

क्षमा सत्य दया दान शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
देव पूजा च हवनं संतोषस्य अर्जवम।
सर्ववत्रेष्वय धर्मः सामान्यो दशधास्मृतः॥'

अर्थात् व्यक्ति के लिए क्षमा, सत्य, दया, दान, पवित्रता, इन्द्रियजय, देवपूजा, हवन, सन्तोष, तपस्या, सरलता, सभी व्रतों में धर्म सेवनीय है। पोथो ग्रन्थ ज्ञान में अमावस्या व्रत के आचरण बारे कहा गया है-[6]

दूध दही सकल वरतां ही, अनं परायो मिटै नांही।
ब्राह्मण साध जो कोऊ आवै, मनसा भोजन तिन ही करावै।

उपवास करने का महत फल सर्वत्र कहा गया है :

पुण्योप्रदो ह्यमदोषहरोऽनलकरः सदा।
स्फर्तीदश्योपवासे वै इन्द्रियाणाप्रसादकः॥

अर्थात् उपवास पुण्य प्रदान करने वाला, आम दोष को हरने वाला, अग्नि को बढ़ाने वाला, स्फूर्ति देने वाला और इन्द्रियों को स्वच्छ करने वाला होता है।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व आत्मशुद्धि के लिए उपवास बहुत जरूरी है। उपवास करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। उपवास से नई ऊर्जा का संचार होता है। उपवास को पुण्य प्रदान करने वाला भी माना जाता है। सप्ताह में कम से कम एक बार जरूर व्रत (उपवास) करना चाहिए। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गुरु जम्भेश्वर भगवान सिर्फ मूल पर्यावरणविद् ही नहीं थे अपितु वे स्वास्थ्य चिंतक भी थे। स्वास्थ्य के लिए तन-मन दोनों का स्वस्थ होना जरूरी है। बिश्नोई पंथ में प्रचलित सभी नियम व संस्कार तन-मन की शुद्धि पर ही बल देते हैं। अमावस्या व्रत भी इसी श्रेणी में एक महत्वपूर्ण उपकर्म है।

संदर्भः (1) पोथे ग्रंथ ज्ञान, स.-आचार्य कृष्णानन्दजी, अमावस्या व्रत कथा मायारामजी द्वारा रचित पृ. 440। (2) डॉ. आशाकिरण व प्रतिमा गौतम, 'स्वस्थ व्रत आहार एवं यौगिक चिकित्सा, पृ. 48। (3) वही पृ. 49, (4) वही पृ. 50, (5) वही पृ. 50, (6) पोथे ग्रंथ ज्ञान, स.- आचार्य कृष्णानन्दजी, अमावस्या व्रत कथा मायारामजी द्वारा रचित, पृ. 441

-रविन्द्र कुमार भुम्बक
सहा. प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा,
राज. महाविद्यालय, भट्टूकलां, फतेहाबाद
मो. : 9467243123

मुनिया का नाटक

बन-ठन पानी लेने को चली है रानी मुनिया,
मुनिया का नाटक देखे दुनिया।
मुनिया और झुनिया नाटक में जा रही पानी को,
चलने को आवाज लगा रही चुनिया रानी को।
चुनिया बोली रूको बहन, दुह आऊं गैया को,
पलना में झुलना दे आऊं रोते छैया को।

मुनिया बोली, बहन सांझ ढलती ही जा रही है,
वापस भी आना है तू क्यों देर लगा रही है।
घर के भीतर से चुनिया बोली आऊं-आऊं,
चिल्लाएंगे बहुत ससुर हुक्का भर आऊं।

झुनिया बोली, बहना चुनिया नदी दूर भारी,
रस्ते में लेगी घेर रात ये काली अंधियारी।
आ गई चुनिया संग तो जोड़ी मिल गई तीनों की,
बीती बातें की जी-भर तीनों ने महीनों की।

आते-आते जब तीनों को हो गई इतनी देर,
रोने लगे सियार हो गया चारों ओर अंधेर।
मुनिया, चुनिया, झुनिया तीनों घर के घेरे में,
जाती हुई दिखी फिर गुम हो गई अंधेरे में।

-प्रभात, जयपुर

पक्षी और बादल

पक्षी और बादल
ये भगवान के डाकिये हैं
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ बाँचते हैं।

हम तो केवल यह आँकते हैं
कि एक देश की धरती
दूसरे देश को सुगंध भेजती है।
और वह सौरभ हवा में तैरते हुए
पक्षियों की पाँखों पर तैरता है।
और एक देश भाप
और दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

चिड़िया और चुरूगन

छोड़ घोंसला बाहर आया,
देखी डालें, देखे पात,
और सुनी जो पत्ते हिलमिल,
करते हैं आपस में बात;
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
'नहीं चुरूगन, तू भरमाया'

डाली से डाली पर पहुंचा,
देखी कलियां, देखे फूल,
ऊपर उठ कर फुनगी जानी,
नीचे झुक कर जाना मूल;
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
'नहीं चुरूगन, तू भरमाया'

कच्चे-पक्के फल पहचाने,
खाए और गिराए काट,
खाने-गाने के सब साथी,
देख रहे हैं मेरी बाट;
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
'नहीं चुरूगन, तू भरमाया'

उस तरू से इस तरू पर आता,
जाता हूँ धरती की ओर,
दाना कोई कहीं पड़ा हो,
चुन लाता हूँ ठोक-ठठोर;
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
'नहीं चुरूगन, तू भरमाया'

मैं नीले अज्ञात गगन की,
सुनता हूँ अनिवार पुकार,
कोई अंदर से कहता है,
उड़ जा, उड़ता जा पर मार;
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
आज सफल हैं तेरे डैने
आज सफल है तेरी काया'

जाम्भाणी प्रश्नोत्तरी 2

प्र.1. गुरु जाम्भोजी के दादा का क्या नाम था ?

प्र.2. माता हंसा का पीहर कहाँ पर था ?

प्र.3. तांतू का ससुराल कौनसे गाँव में थी ?

प्र.4. 'विसनु भणन्ता पाप खयो' कौन-से मन्त्र की पंक्ति है ?

प्र.5. 'नव अवतार नमो नारायण तेपण रूप हमारा थीयो' कौन-से सबद की पंक्ति है ?

प्र.6. गुरु जाम्भोजी किसके अवतार थे ?

प्र.7. 'कथा बाळलीला' किस कवि की रचना है ?

प्र.8. लूर की रचना किस कवि ने की थी ?

प्र.9. 'उमावड़ो' साखी किस कवि द्वारा रचित है ?

प्र.10. जम्भभक्त बाजोजी तरड़ कहाँ के निवासी थे ?

इन प्रश्नों के उत्तर पोस्टकार्ड पर लिखकर 20 फरवरी तक 'अमर ज्योति' बिश्नोई मन्दिर, हिसार के पते पर भेजें या editor@amarjyotipatrika.com पर ईमेल करें। सभी प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले 5 विजेताओं के नाम ड्रा द्वारा निकाले जाएंगे, जिनको 200-200 रुपये का जांभाणी साहित्य पुरस्कार स्वरूप भेजा जाएगा। आगामी अंक में पुरस्कार विजेताओं के नाम व इन प्रश्नों के उत्तर प्रकाशित किए जाएंगे। उत्तर भेजने वालों से अनुरोध है कि वे अपना पूरा पता व दूरभाष नंबर साथ में अवश्य भेजें।

-सम्पादक

जाम्भाणी प्रश्नोत्तरी 1 के उत्तर

उ.1. सबद संख्या 25 से

उ.2. सैंसा भक्त नाथूसर के निवासी थे। उनकी बुरी आदत थी कि वे हर वक्त अपने दानी और धनी होने का बखान करते रहते थे।

उ.3. पूल्होजी लाडनूं गाँव में रहते थे तथा उनका देहावसान रणीसर, जोधुपर में हुआ था।

उ.4. गुरु जी ने नवण मंत्र अपनी बुआ तांतू के प्रति कहा था।

उ.5. गुरु जाम्भोजी को बुलवाने के लिए भोपे ने कुल तेरह जीवों की बलि दी थी।

उ.6. गुरु जी ने जैसलमेर के रावत जैतसी का कुष्ठ (कोढ़) रोग ठीक किया था।

उ.7. राव जोधा को नगाड़े गुरुजी ने वि.सं. 1526 में दिए थे।

उ.8. लोहट जी का स्वर्गवास वि.सं. 1540 में चैत्र सुदी नवमी को तथा उनके पाँच माह बाद 1540 भादों की पूर्णिमा को हँसा देवी का स्वर्गवास हुआ।

उ.9. उदोजी नैण गोठ मांगलोद के रहने वाले थे। जाम्भोजी के सम्पर्क में आने से पहले देवी (दधिमति माता, महमाई) की पूजा करते थे।

उ.10. गुरुजी ने बीदाजी को आक पर आम, नीम पर नारियल, तथा पानी का दूध बनाकर चमत्कार दिखाए थे।

सभी प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले पाँच भाग्यशाली विजेताओं के नाम-

1. हवा सिंह सहारण, गांव कालीरावण, जिला हिसार; **2. मनीषा बिश्नोई,** 148, विद्यानगर, पावटा 'सी' रोड, जोधपुर (राज.); **3. बुधराम कड़वासरा,** गांव घट्टू, जिला बीकानेर (राज.); **4. नवनीत धारणियां,** भूना, जिला फतेहाबाद; **5. मनफूल बिश्नोई,** मण्डी पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ़।

नोट : सभी विजेताओं को 200-200 रुपये का जाम्भाणी साहित्य पुरस्कार डाक द्वारा भेजा जा रहा है। जांभाणी साहित्य प्रश्नोत्तरी के प्रश्नों के उत्तर भेजने वाले सभी प्रतियोगियों का हार्दिक आभार।

हिंगोली काण्ड

पात्र परिचय

पुरुष पात्र– महाराज तख्त सिंह– जोधपुर नरेश
सिंधी साहब–जोधपुर राज्य का एक अधिकारी
मोहन सिंह– राजा का एक अंगरक्षक
सोहन सिंह– राजा एक अनुचर
बिश्नोई समाज– हिंगोली और आसपास के बिश्नोई
राजा का मंत्री

स्त्री पात्र– इमरती बाई– हिंगोली की एक लड़की
धन्नोबाई– हिंगोली की दूसरी लड़की

प्रथम दृश्य

जोधपुर नरेश तख्तसिंह का आम दरबार चहल–पहल और रौनक से ओतप्रोत है। कलाकार नृत्य कला के प्रदर्शन में तल्लीन है। वाद्य–वृन्द की मंद–मंद ध्वनि बज रही है। सभी दरबारी यथा आसन विराजमान हैं। राजा (प्रसन्न मुद्रा में) मोहन तुम बहुत दिनों से दरबार में आए हो।

मोहन सिंह– महाराज (विनम्रतापूर्वक) आपसे छुट्टी लेकर बूढ़ी–बीमार माता जी को देखने गया था।

राजा– घर पर सब कुशल मंगल है।

मोहन सिंह– (हाथ जोड़कर) आपकी मेहरबानी से सब ठीक है। माता जी बीमारी से छूट गयी है। अब ठीक है।

राजा– मोहन। आज सिंधी साहब दरबार में दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। कहाँ गायब हो गये? पीता बहुत है, उसमें यह एक बड़ा ऐब है।

मोहन सिंह– महाराज! कल वह अपने गांव जाने के लिए कह रहा था। उसके हाथ में तो एक बन्दूक भी थी।

राजा– वह बन्दूक घर किसलिए और किसके हुक्म से ले गया।

मोहन सिंह– (कातर स्वर से) महाराज! इस बात का मुझे पता नहीं है।

राजा– हाँ, कुछ दिन पहले मुझसे घर जाने की प्रार्थना उसने अवश्य की थी।

मोहन सिंह– महाराज! सोहनसिंह उसके साथ अधिक रहते हैं, शायद उनसे पता लग सकता है।

महाराज– (कौतूहल से) सोहन सिंह को तुरन्त मेरे सामने हाजिर करो।

मोहन सिंह– महाराज! सोहनजी तो बाजा बजाने वाले के पास बातचीत कर रहे हैं। (मोहन सिंह) सोहन सिंह को महाराज का आदेश सुनाता है और वह दौड़कर राजा के सामने हाजिर हो जाता है।

सोहन सिंह– महाराज! खम्माघणी, राजा के चरणों में धोक देता है। जोधपुर नरेश (जिज्ञासा भाव) व तुमने सिंधी साहब को कहीं देखा है। उसका कुछ पता है।

सोहन सिंह– महाराज कल सांझ को देखा था। वह हिंगोली गांव की ओर जाने की कह रहा था।

राजा– हिंगोली। हिंगोली में उसका क्या काम है? बड़ा खुशामदी है। चिकनी–चुपड़ी और मीठी–मीठी बातें बनाता है।

दूसरा दृश्य

सिंधी– (स्वागत कथन) मैं आसपास के कई गांवों में घुम चुका हूँ। कहीं कोई शिकार नहीं मिला। अब किसका शिकार किया जाए। जोधपुर नगर के आसपास तो कोई वन्य जन्तु दिखाई नहीं पड़ते हैं। कई लोगों से सुना है कि बिश्नोइयों के गांव हिंगोली में बहुत चिंकारा हिरण हैं। उनका मांस भी बड़ा स्वादिष्ट होता है। (वह घूमता हुआ हिंगोली पहुंच गया। वहां तो हिरणों की कई डार हैं।)

इमरती– (दूर से जोहड़ की पाल पर बैठे हुए सिंधी को देखक) धन्नो बहन! देखो! यह

ओपरा पराया आदमी कौन है?

धन्नो– (डरकर) इमरो बहन जल्दी से अपना पानी का मटका पानी से भर ले।

इमरो– धन्नो! यह माणस तो घूरकर हमारी ओर देख रहा है। दाल में कुछ काला है।

इमरो– (कांपकर) बहन! मेरा तो आधा घड़ा ही भरा है। घर की ओर भाग लो।

धन्ना– मेरे भी हाथ कांप रहे हैं। कभी हाथ से घड़ा छूट नै जावै। (लड़कियां गांव में जाकर अजनबी आदमी के बारे में खबर करती हैं।) लड़कियां तो गई, पर जल पीने के लिए वे एक हिरणों की टोली इधर आ रही। उसने आव देखा न ताव, गोली काले हिरण पर चलाई। पर बन्दूक का निशाना चूक गया। हिरणों की डार बन्दूक की आवाज सुनकर जंगल की ओर दौड़ गई और हिंगोली गांव के लोगों की भीड़ भी इकट्ठी हो गई। लोगों को अपनी ओर आते देखकर सिन्धी वहां से जान बचाकर जोधपुर भाग आया।

तीसरा दृश्य

(महाराजा तख्त सिंह अपने महल में राजकीय अधिकारियों से राज्य की व्यवस्था सुधारने के लिए विचार–विमर्श कर रहे हैं। महल बड़ा भव्य है। सोने–चांदी की झालरें दीवारों पर लटकी हैं। सब अधिकारी यथा–स्थान बैठे हैं।)

मोहन सिंह– (महाराज की आज्ञानुसार महल में प्रवेश करता है) सिंधी के आगमन की सूचना देता है।

मोहन सिंह– महाराजा सिंधी साहब आपसे मिलना चाहते हैं। आदेश है।

महाराज– तख्त सिंह (उत्सुकता से) उसको जल्दी बुलाओ।

सिंधी– नीची गर्दन करके हाथ जोड़कर। महाराज पाय लागूं। खम्माघणी (महाराज अन्य राज कर्णभाइयों को महल से जाने के लिए हाथ से संकेत करते हैं)। सभा विसर्जित होती है।

राजा– सिंधी साहब ईद के चांद हो गये हो।

सिंधी– (हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाता हुआ) अन्नदाता! आपके हुक्म से छुट्टी लेकर बीमार बुढ़िया माँ को देखने गया था।

राजा– सो तो ठीक है। पर वहाँ बन्दूक ले जाने का क्या काम था?

सिंधी– (झूठ का नाटक करके) महाराज! गाँव दूर था। मैंने सोचा कोई जंगली जानवर न मिल जाए। मेरे बचाव के लिए यह हथियार ले गया था। जिसको हथियार खाने में जमा करादी है। खता मुआफ हो।

राजा– आगे से ध्यान रखना बंदूक आदि कोई भी हथियार बाहर न ले जाना।

सिंधी– (हाथ जोड़कर मधुर वाणी से) अन्नदाता! नाराज न हो तो एक अपनी आप बीती बताऊं (वह राजा का बड़ा विश्वसनीय और स्वार्थसिद्धि में बड़ा निपुण था)।

महाराज आप तो सबके मालिक राजा हैं। शिकार खेलना, राजाओं का एक शौक रहा है। मनोरंजन के लिए कभी–कभी जंगल में जाकर शिकार भी करना चाहिए।

राजा– शिकार कहाँ, अब आसपास वन्य जन्तु ही नहीं दिखाई पड़ते हैं।

सिंधी– महाराज! आपका यह सेवक शिकार का इंतजाम करने के लिए वचनबद्ध है। कृपया आप एक बार चलने का मन तो बनाये (इस प्रकार अपनी मीठी–मीठी बातें बनाकर राजा को शिकार करने के लिए वन में जाने के लिए तैयार कर लिया। राजा जब शिकार पर जाने के लिए प्रस्थान करने वाले थे तब मन्त्री को पता लग गया।)

मन्त्री– महाराज! मुझे अपशकुन हो रहे हैं। आप आज न जाएं।

सिंधी– (बीच में टांग अड़ाकर बोला) महाराज! महाराज वे अपनी मर्जी के मालिक हैं।

मन्त्री– महाराज, शिकार के लिए कहाँ जा रहे हैं?

सिंधी– हम बिश्नोइयों के गाँव हिंगोली जा रहे हैं।

मन्त्री– राजन्! फिर अकेले न जाए। कोई अशुभ घटना घट सकती है। बिश्नोई जीव दया पालन धर्म के पक्के हैं।

चौथा दृश्य

(राजा ने सैकड़ों सशस्त्र सैनिकों के साथ जाकर हिंगोली के तालाब पर तम्बू गाड़ दिए। बिश्नोइयों को यह आदेश ढिंढोरा पीटकर दिया कि कोई भी नर और नारी घर से बाहर न निकले। यह राजा का हुक्म है। यदि कोई जानबूझकर या भूलकर घर से बाहर निकलेगा। वह सिपाहियों की गोली का शिकार होगा। (यह घिराव के अर्थ को न समझ सके) हिरणों की रक्षा की उनको बड़ी चिन्ता थी। पर लाचार थे और भगवान का भजन और कीर्तन करने लगे। श्री जाम्भो जी महाराज का हाथ जोड़कर स्मरण करने लगे। वे ही हमारे और सबके रक्षक हैं।

सिंधी– महाराज! देखने की कृपा करें। दूर से हिरणों की डार सरोवर पर जल पीने के लिए आ रही है। आप सावधान हो जाएं। राजा ने हिरणों की डार आने से पूर्व सैनिकों में जोधपुर जाने का आदेश दे दिया था। डर के मारे अन्यथा डार वहाँ कैसे आती।

राजा– सिंधी! ये हिरण तो बड़े सुन्दर हैं। मेरी आँखें इनको देखकर तृप्त हो रही हैं। (हिरणों की टोली ने निर्भय होकर सरोवर में जलपान किया और फिर जंगल की ओर कूच करने लगी।)

सिंधी– महाराज! आप क्या देख रहे हैं? शिकार तो हाथ से निकल कर जा रहा है। (सिंधी के उकसाने पर राजा के हाथ की बंदूक से एक गोली चल गई। पर किसी भी हिरण को न लगी। बन्दूक की आवाज सुनकर हिरणों की डार चौकड़ी मारकर गायब हो गई। सिंधी ने राजा को भड़काया और राजा घोड़े पर सवार होकर हिरणों के पीछे दौड़ा। जाको राखे साइयां, मार सके न कोय।

राजा– (धड़ाम से घोड़े से गिरा और दर्द के मारे चिल्लाया) अरे! सिंधी बचा, तूने तो मुझे मरवाया। मंत्री ही ठीक कह रहे थे। दुष्ट कहीं का यहाँ से चला जा। न तो तेरा खून पी जाऊँगा। (पर सिंधी तो पहले वहाँ से नौ दो ग्यारह हो चुका था।)

पाँचवा दृश्य

(जब बिश्नोइयों को पता चला, राजा तख्त सिंह घायल होकर झाड़ियों में पड़ा है। तब जाम्भो जी महाराज की जय बोलते हुए वहां आये और राजा को उठाया और उनकी सेवा शुश्रूसा की राजा का एक हाथ टूट गया था। राजा को सकुशल जोधपुर के महल में पहुंचाया।)

राजा– आप लोगों ने वैरभाव भूलकर मेरी रक्षा की। मेरा घोड़ा मुझे पटक कर कहीं जंगल में दौड़ गया। जो पाजी सिंधी मुझे फुसलाकर शिकार कराने लाया था। मुझे पड़ा देखकर वह चापलूस और स्वार्थी वहां से न मालूम कहां चम्पत हो गया।

बिश्नोई समाज– महाराज! हमारे गुरुदेव जाम्भो जी महाराज ने हमें जीव दया पालना सिखाया है।

राजा– (आँखों में आँसू भरकर) आप लोगों ने मेरी रक्षा की। मैं उसके बदले में आप लोगों को वस्त्राभूषणों से अलंकृत करता हूँ और साथ में वह ताम्रपत्र लिखता हूँ।

श्री परमेश्वर जी सत्य हैं। श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज श्री तख्तसिंह जी वचनात थापन बिश्नोइयां का गांव री सांव में नीली खेजड़ी कोड बाहरण। पावै नहीं, सिकार खेला। पावै नहीं, काईं नीली खेजड़ी बाढ़सी, सिकार खेल खेल सी दरबात रो गुनगार होसी। संवत् उन्नीस सौ वैशाख वदी (एक गढ़ जोधपुर)। प्रजा ने राजा का जय जयकार किया। (आनन्द की लहर उमड़ी)

यवनिका पतन

– **डॉ. ब्रह्मानन्द,** पूर्व अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

जम्भवाणी में प्रतिपादित प्रमुख शब्दों की शास्त्रीय समीक्षा

निस्सन्देह समूचे विश्व में भारतवर्ष की दिव्य वसुन्धरा में परिलक्षित आध्यात्मिकता की उर्वरा शक्ति अतुलनीय है, अनुपम है। 'भारत'[1] नाम को सार्थक करती हुई इस पावन भूमि ने अपने विराट एवं स्नेहमय आँचल में समय-समय पर ऐसे महान् योगेश्वरों, अवतारी पुरुषों, भगवद्भक्तों एवं मनीषियों को जन्म दिया, जिन्होंने अपने आदर्शमय जीवन एवं आध्यात्मिक अनुभूतियों के सौजन्य से न केवल भारतवर्ष का अपितु विश्व का मार्गदर्शन किया।

युग, परिस्थिति एवं समाज के सामर्थ्य का आंकलन करके तदनुरूप भाषा, गाम्भीर्य एवं शैली का निर्वहन करते हुए अपने उच्चतम आध्यात्मिक अनुभव को अभिव्यक्ति प्रदान करना ही सच्चे अवतारी पुरुष का लक्षण है। बिश्नोई पंथ के प्रवर्तक गुरु जाम्भोजी पर उक्त लक्षण अक्षरशः चरितार्थ होता है। आध्यात्मिकता के उच्चतम धरातल पर विराजमान जाम्भोजी ने अपने आध्यात्मिक संदेश के प्रसारण का माध्यम जनसामान्य की भाषा को ही बनाया। उनका भ्रमण व्यापक था। वे देश के अनेक भागों में प्रचारार्थ गए थे, तथापि उनका प्रमुख कार्य क्षेत्र राजस्थान ही रहा था।[2] यही कारण है कि जाम्भोजी द्वारा रचित साहित्य में राजस्थानी (विशेषतः नागौर एवं जोधपुर में बोली जाने वाली मारवाड़ी बोली) का प्रभाव स्पष्टतः प्रतिबिम्बित हुआ है। सर्वजनग्राह्य भाषा से सुरभित उनका साहित्यिक उपवन वैदिक, वेदान्त, योग, वैष्णव एवं पौराणिक आदि मान्यताओं के पुष्पों से सुवासित एवं सुगन्धित है। प्रस्तुत लेख में प्रमुखतः इन्हीं मान्यताओं को आधार बनाकर जाम्भोजी द्वारा प्रयुक्त की गई शब्दावली की शास्त्रीय समीक्षा करने का प्रयास किया जा रहा है।

वैदिक वाङ्मय में 'एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' की धारणा के सौजन्य से यह तथ्य प्रतिपादित किया गया है कि एक ही परम सत्ता (परमेश्वर) के (इन्द्र, मित्रादि) अनन्त नाम हैं। साधक एवं ज्ञानीजन परमेश्वर के असंख्य गुणों के आधार पर उन्हें (परमात्मा को) अनेक नामों से पुकारते हैं। जाम्भोजी की वाणी में भी परमेश्वर के लिए प्रमुखतः विसन (विष्णु[3]) शब्द का प्रयोग करने के साथ-साथ ओम्[4], नारायण[5], हरि[6], राम[7], कृष्ण (किसन)[8], परसराम[9], सिंभू (स्वयंभू)[10], रहमान एवं रहीम[11] आदि महिमावाचक शब्दों का प्रयोग किया गया है।

'विष्णु' शब्द परमेश्वर की सर्वव्यापकता का द्योतक है। सृष्टि के कण-कण में वह जगन्नियन्ता विष्णु (बिसन) विद्यमान है।[12] विष्णु पुराण की मान्यता है कि परमेश्वर का 'विष्णु' नाम ही सर्वश्रेष्ठ, वर (अभिष्ट) दाता एवं वरण करने योग्य (शरण लेने योग्य) है।[13] ऋग्वेद के 'विष्णु-सूक्त' पर भाष्य लिखते हुए सुप्रसिद्ध भाष्यकार सायण ने भी 'विष्णु' का अर्थ सर्वव्यापक परमेश्वर ही किया है।[14] निरूक्तकार यास्क की भी यही मान्यता है।[15] भगवान् जाम्भोजी द्वारा प्रयुक्त परमेश्वर के अन्य (ओम्, नारायण, हरि एवं कृष्ण आदि) नाम भी परमेश्वर के किसी विशेष गुण, कर्म, स्वभाव एवं महिमा को प्रतिपादित करने वाले हैं। शास्त्रों में इसी आधार (गुण, कर्म एवं स्वभाव आदि) पर इन नामों की व्याख्या की गई है। मनुस्मृति में ॐ (ओम्) को परब्रह्म का वाचक माना गया है।[16] श्री मद्भगवद् गीता की मान्यता है कि ॐ का उच्चारण करता हुआ साधक भगवच्चिन्तन में निमग्न होकर यदि शरीर का त्याग करता है तो वह निश्चित रूप से परमगति को प्राप्त करता है।[17] 'ॐ' को ओंकार एवं प्रणव संज्ञा भी प्रदान की गई है[18] और शास्त्रों में 'ॐ' का प्रमुख अर्थ रक्षक (अवति इति ओम्) स्वीकार किया गया है। वैदिक वाङ्मय में 'ॐ' को परब्रह्म का श्रेष्ठ नाम मानकर[19] समस्त मन्त्रों का अधिष्ठान अंगीकार किया गया है[20]।

परमेश्वर के नारायण, हरि एवं कृष्णादि नाम भी नानाविध विशिष्टताओं के सूचक हैं। नरों (मनुष्य एवं अन्य प्राणियों) का अयन (आधार) होने के कारण वे 'नारायण' कहलाते हैं[21], 'कृष्ण' का शाब्दिक अर्थ है अपने गुणों, सौन्दर्य एवं दिव्य उपदेश से सबको आकृष्ट करने वाले महामहिमाशाली भगवान्[22], विशिष्ट गुण सम्पदा से समलंकृत ये श्रीकृष्ण परब्रह्म, सर्वसमर्थ (ईश्वर) है[23], सच्चिदानन्दस्वरूप हैं[24]। इस अनुपम गुण सम्पदा से शोभायमान् परमेश्वर का जो आश्रय लेता है, उस भगवद्भक्त साधक के समस्त पापों एवं दुःखों को वे हर लेते हैं। अतः वे 'हरि' कहलाते हैं।[25] पुराणकार की मान्यता है कि कलियुग में एकमात्र 'हरि' का नाम ही जीव का उद्धार कर सकता है।[26]

परमेश्वर के अद्भुत नामों का स्मरण करने के प्रसंग

में जाम्भोजी ने जिस 'सिंभू' नाम को ध्वनित किया है, वह वस्तुत: 'स्वयंभू' का ही रूपान्तर (अपभ्रंश) है। सिक्ख पंथ में यह शब्द 'सैभं' के रूप में प्रयुक्त हुआ है।[27] मूलत: यह शब्द यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में दृष्टिगोचर होता है[28], जिसका शाब्दिक अर्थ है– स्वयं (अपने) से स्वयं उत्पन्न (भू) होने वाला। आदि शंकराचार्य जी ने भी यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय (जिसका नामान्तर 'ईशवास्योपनिषद्' भी है) के इस मन्त्र पर भाष्य लिखते हुए 'स्वयंभू' का अर्थ 'स्वयं को स्वयं ही उत्पन्न करने वाला' किया है।[29] साम्प्रदायिक भेदभाव से कोसों दूर श्री जाम्भोजी ने परमेश्वर के जिन रहीम एवं रहमान शब्दों का आदर सहित उल्लेख किया है, वे परमेश्वर की रहमत (दया भाव) एवं न्यायप्रियता आदि गुणों को दर्शाने वाले हैं। इस्लाम धर्मावलम्बी बन्धुओं के धर्मग्रन्थ 'कुरान शरीफ' की सबसे पहली आयत में कहा गया है कि 'मैं सभी प्राणियों पर दया करने वाले (रहमत करने वाले) 'रहीम' का स्मरण करके अपने कार्य को प्रारम्भ (बिसमिल्ला) करता हूँ'।[30]

परमेश्वर के उक्त विशेषणवाची नामों की शास्त्रीय समीक्षा के साथ-साथ 'श्री जम्भवाणी' में 'नाथपंथी'[31] एवं योगियों के लिए जो मार्गदर्शन किया गया है[32], उस दृष्टि से भी यदि विचार कर लिया जाए तो जाम्भोजी द्वारा निर्दिष्ट सच्चे साधक (नाथ एवं योगी आदि) के लक्षणों को भी सहज ही समझा जा सकता है। जाम्भोजी ने नाथों एवं योगियों के बाह्य आडम्बर पर तीखा प्रहार करके उनके सम्प्रदाय की सम्यक् साधना पद्धति का संकेत किया है। हिन्दी-साहित्य के सुविख्यात विद्वान् आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'नाथ' शब्द की व्याख्या करते हुए उसे अनादि ब्रह्म का पर्याय स्वीकार किया है। उनकी मान्यता है कि 'नाथ' की व्युत्पत्ति इस प्रकार हो सकती है– 'न+अथ' अर्थात् जिसका अथ (आरम्भ आदि) न जाना जा सके, वह अनादि ब्रह्म ही 'नाथ' शब्द का वाचक है। इस तथ्य की पुष्टि 'राजगुह्य' तन्त्र से भी होती है। इस तन्त्र ग्रन्थ में कहा गया है कि 'ना' का अर्थ अनादि रूप तथा 'थ' का अर्थ तीनों लोकों में स्थापित होने वाला परमेश्वर है।[33] इस (नाथ) सम्प्रदाय के संस्थापक आदिनाथ भगवान् शिव माने गए हैं। कालान्तर में यह सम्प्रदाय मत्स्येन्द्रनाथ एवं गोरखनाथ (गोरक्षनाथ) की साधना प्रणाली से समन्वित होकर मोक्ष प्राप्ति का उत्तम मार्ग सिद्ध हुआ।[34] धीरे-धीरे इस सम्प्रदाय में शिथिलता आने लगी। जम्भवाणी में 'नाथ' पंथ के पुरातन गौरव एवं महिमा को उजागर करके 'नाथपंथियों' को पुन: सम्प्रदाय की सही साधना प्रणाली को अपनाने की प्रेरणा दी गई है।

'जम्भवाणी' से ज्ञात होता है कि योगाभ्यास करने वाले साधक भी कालप्रवाह से योग के साधनापक्ष से विमुख होकर केवल बाह्य कर्मकाण्ड को ही योग-साधना मान बैठे थे। भारतवर्ष के प्राय: सभी धर्मग्रन्थों, स्मृतियों एवं दार्शनिक सम्प्रदायों में 'योग' का महत्व स्वीकार किया गया है। इस तथ्य का प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि भारतवर्ष के प्रमुख छह दर्शनों में 'योगदर्शन' का विशिष्ट स्थान है। 'श्रीमद्भगवद् गीता' में 'योग' के विभिन्न पक्षों को आलोकित करते हुए चौसठ (64) बार 'योग' शब्द का प्रयोग हुआ है। संस्कृत भाषा की तीन धातुओं 'युजिर्योगे', 'युग्समाधौ' एवं 'युज् संयमने' से 'योग' शब्द की व्युत्पत्ति की जाती है। इन तीनों धातुओं के आधार पर 'योग' शब्द का अर्थ क्रमश: इस प्रकार किया जा सकता है– 'योग' वह साधना है जो परमात्मा के साथ नित्य सम्बन्ध, चित्त की स्थिरता (समाधि) एवं संयम की प्राप्ति में सहायक हो। अत: स्पष्ट है कि बाह्य साधनों की अपेक्षा योग में आन्तरिक साधना (मन एवं इन्द्रिय आदि का संयम एवं स्थिरता) का अधिक महत्त्व है। जाम्भोजी वस्तुत: 'योग' के इसी तथ्य को ही उजागर करना चाहते हैं।

अस्तु, भगवत्प्रेरणा से इस लेख में कुछ महत्त्वपूर्ण पक्षों को आधार बना कर उनकी शास्त्रीय समीक्षा करने का उपक्रम किया गया है। विज्ञ पाठकगण अनुमान लगा सकते हैं कि शास्त्रों के गहन, गम्भीर एवं सूक्ष्म तत्त्व को सरल एवं सर्वजन ग्राह्य भाषा में लिपिबद्ध करके श्रीयुत् जाम्भोजी ने कितना महान् उपकार किया है। इस लघुकाय लेख में कुछ पक्षों पर ही विचार हो पाया है। 'जम्भवाणी' में विद्यमान और भी शब्द रूपी रत्न हैं, जिन पर श्रीहरि प्रेरणा से पुन: लिखने का सुअवसर प्राप्त होगा।

संदर्भ–

1. 'भारतम्' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है– 'भा' ब्रह्मविद्या तस्या रतम्' अर्थात् जो राष्ट्र ब्रह्मविद्या (ब्रह्म ज्ञान) में रत हो, उसे 'भारत' कहते हैं।
2. 'जाम्भोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य' (पहला भाग), ले. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पृ. 169।
3. (i) विसन विसन तूं भणि रे प्राणी, ईह जीवण कै हावै।
   (ii) विसन विसन भणि अजर जरीजै, लाहो लीजै पह

जांणीजै।

(iii) विसन विसन तूं भणि रे प्राणी, विसन भणं तां अनंत गुणूं। (देखें 'जाम्भवाणी, 119-120, 121)।

4. 'ओं आदि सबद अनाहद वाणी। चवदै भुवंण रह्या छलि पांणी।' (वही, 94)।
5. 'नव अवतार न्यंमो नारायण, ते पंणि रूप हमारा थीयौ।' (वही, 4)।
6. 'हिन्दू होय कै हरि क्यूं न जप्यौ, कांय दह दिस दिल पसरायौ।' (वही, 6)।
7. 'राम राय सूं दीन्हीं दानी। कान्ह चराई रंन बेवांनीं।' (वही, 68)।
8. 'किसन मया तिहूं लोकां साखी, इमरत फूल फळीजै।' (वही, 92)।
9. 'परसराम होय छत्रायंण साझ्या गरभ न छूट्यौ नारी।' (वही, 93)।
10. 'अलाह अलेख अडाल अजूँनी सिंभू। पवण अधारी पिंड ज लूँ।' (वही, 40)।
11. 'बिसमिल्ला रहमान रहीम जिंहके सिदके भीनांभीन।' (वही, 67)।
12. विष्णु की व्यापकता के विषय में यह मान्यता प्रचलित है- 'जले विष्णुः स्थलेविष्णुः विष्णुः पर्वतमस्तके।'
13. 'विष्णुर्वरिष्ठो वरदो वरेण्यः।' (विष्णु पुराण)।
14. देखें- ऋग्वेद के विष्णुसूक्त (मण्डल-1, सूक्त 154) पर सायणभाष्य- 'विष्णुर्व्यापनशीलस्य....।'
15. 'विष्णुः व्यश्नोतेर्वा व्याप्नोतेर्वा' (देखें- यास्ककृत 'विष्णुः' की निरुक्ति)।
16. 'एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामाः परं तपः। (मनुस्मृति, अध्याय-2, श्लोक 83)।
17. 'ओमित्येकाक्षरं, ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयातित्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।' (श्रीमद्भगवद् गीता, अध्याय-8, श्लोक 13)।
18. 'तस्य वाचकः प्रणवः।' (योगदर्शन, 1/1/27)।
19. (i) 'ओमिति ब्रह्म।' (तैत्तिरीयारण्यक, 7/8); (ii) 'ओ३म् खं ब्रह्म।' (यजुर्वेद 40/17)।
20. 'ओमित्येतदक्षरमिद॰ सर्वं तस्योपव्याख्यानम्।' (माण्डूक्योपनिषद्)।
21. 'आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः। ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः।' (मनुस्मृति, अध्याय 1, श्लोक 10)।
22. स्वगुणैः सौन्दर्येण दिव्योपदेशेन च आकर्षति सर्वान् इति कृष्णः।
23. 'ईश्वरः परमः कृष्णः' (ब्रह्मसंहिता)।
24. 'सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णाय।' (गोपालतापनी उपनिषद्, 1/1)।
25. स्वाश्रितानां पापानि दुःखानि च हरति इति हरिः।
26. 'हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्। कलौ नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।' (पुराणवचनानि)।
27. सिक्ख पंथ के मूल मंत्र में सैभं (सिंभू, स्वयंभू) शब्द का प्रयोग इस प्रकार हुआ है- 'एक ओंकार सतनाम करता पुरख निर्भो निरवैर अकालमूरत अजूनि सैभं गुर प्रसाद।'
28. 'स पर्यगाच्छुक्रमकायमब्रणमस्नाविर॰ शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।'
29. स्वयं भवति इति स्वयंभूः' (ईशावास्योपनिषद्, मन्त्र 8 पर आदि शंकराचार्य कृत भाष्य)।
30. देखें- 'कुरान शरीफ' की पहली आयत 'बिसमिल्लाहे रहमाने रहीम।'
31. 'नाथ कहावै मरिमरि जावै, ते क्यों नाथ कहावै। नान्हीं पवणी जीवाजूंणी निरजत सिरजत फिरि फिरि पूठा आवै।' (देखें- जाम्भवाणी, 49)।
32. 'जिहं जोगी कै मन ही मुंदरा तन ही खंथा, पिंडै अगनि ठंभायौ।' (वही)।
33. 'नाकारोऽनादिरूपं थकारः स्थाप्यते सदा।' (राजगुह्य तन्त्र)।
34. 'श्रीमोक्षदानदक्षत्वात् नाथब्रह्मानुबोधनात्। स्थगिताज्ञानविभवात् श्रीनाथ इति गीयते।' (शक्तिसंगम तन्त्र)।

-डॉ. सुभाष चन्द्र सेचदेवा
विभागाध्यक्ष, संस्कृत हि.क.महाविद्यालय
758, सेक्टर 15, सोनीपत
मो.: 9996302758

पुस्तक समीक्षा

वृक्षों के लिए बलिदान का दस्तावेज

रचनाकार की गहन अध्ययन के बाद रची कृति '363 वृक्ष मित्रों की शहादत' प्राणों के मूल्य पर पेड़-पौधों की रक्षा करने वाले प्रकृति के सच्च हितचिंतकों के अवदान को रेखांकित करने का प्रयास है, जिसमें पर्यावरण संबंधी ऐतिहासिक गाथा के साथ आज की परिस्थितियों को देखने की कोशिश की गई है। वृक्ष मित्रों के बलिदान की रोएं खड़े कर देने वाली यह लोमहर्षक घटना बताती है कि ऐशो-इशरत की खातिर ऐशगाह खड़ी करने के लिए तत्कालीन शासक रिआया पर कितने वहशियाना ढंग से जुल्म ढाते थे। वाकआ भारत के मरु-प्रदेश राजपुताना का है। यह दुर्घटना आज से 286 वर्ष पूर्व जोधपुर (मारवाड़) रियासत के नरेश अभय सिंह के शासनकाल के समय सन् 1739 ईस्वी में घटी थी। महाराजा साहब उन दिनों जोधपुर स्थित महरानगढ़ दुर्ग में 'फूल महल' नामक विलास भवन का निर्माण करवा रहे थे। महल की चिनाई के लिए चूना बनाने हेतु लकड़ियों की जरूरत पड़ती रहती थी। आस-पड़ोस के गांवों से लकड़ियां काटकर भंडारगृह में लायी जाती थीं। एक बार भंडार के अध्यक्ष गिरधरदास ने जोधपुर से 12 कोस दूर बसे खेजड़ली गांव में खड़े खेजड़ी के पेड़ों को काटने का आदेश दिया। राजा के सैनिकों ने हरे-भरे पेड़ों को काटना शुरू कर दिया। पेड़ों पर शासन की कुल्हाड़ियां चलती देखकर निकट खेल रहे बच्चों में से दो नन्ही-नन्ही बच्चियां भागकर अपने घर गई और अपनी माँ अमृता देवी को सारी बात बतायी। अमृता देवी की चारों बेटियों ने पलभर में यह बात सारे गांव में फैला दी।

गांववासी तुरन्त घटनास्थल पर पहुंच गए और सैनिकों को पेड़ काटने से मना किया। गिरधरदास ने गांववासियों की एक नहीं सुनी, उनके हो-हल्ला मचाने के बाद पेड़ों को काटते रहे। गिरधरदास की जोराजोरी को देखने के लिए दो-चार रोज के भीतर खेजड़ली गांव में आसपास के चौरासी गांव के स्त्री-पुरुष एकत्र हो गए। जब गिरधरदास की जबरदस्ती किसी तरह भी नहीं रूकी तो अमृता देवी बिश्नोई ने वहां एकत्र भीड़ को जोशीले स्वर में ललकारते हुए पुकारा कि 'सिर सांठे रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण' यानि शीश देकर भी वृक्ष बचते हों तो यह बहुत सस्ता सौदा है। अमृता के एक बोल पर सैकड़ों स्त्री-पुरुष एवं गबरू जान हथेली पर रखकर वृक्षों के तनों से लिपट गए। परन्तु गिरधरदास भी पूरा जल्लाद था, उसने मार-काट का हुक्म दे दिया। सैनिकों की तीक्ष्ण कुल्हाड़ियां खचाखच पेड़ों से चिपके लोगों पर चलने लगी। थोड़ी ही देर में वहां चारों तरफ लाशें बिछ गई। 293 मर्द, 47 स्त्रियां और 23 नवयौवनाएं वृक्षों के लिए बलि चढ़ गईं। तब जाकर महाराजा अभयसिंह की कुंभकर्णी नींद टूटी और उन्होंने मौके पर पहुंचकर पेड़ों की कटाई बंद करवाई। इस हादसे के बाद लोकलाज से डरकर राजा ने जोधपुर रियासत में हरे पेड़ों की कटाई पर पूर्ण पाबंदी लगा दी। विश्व इतिहास में पेड़ों के लिए बड़े पैमाने पर मानव बलिदान की यह एकमात्र विरल दुर्घटना है। जिन 363 लोगों ने बलिदान दिया, वे सब 'बिश्नोई समाज' के अनुयायी थे, जिसकी स्थापना गुरु जम्भेश्वर महाराज ने 531 वर्ष पूर्व ईस्वी सन् 1485 में बीकानेर के 'सम्भराथल धोरा' नामक स्थान पर की थी।

पुस्तक-363 वृक्ष मित्रों की शहादत
लेखक- अरुण जौहर
प्रकाशक- नवजीवन पब्लिशर, प्रेस बिल्डिंग, जैन गली, हिसार
पृष्ठ-96
मूल्य-100 रुपये

प्रकृति प्रेम और जीव दया का पाठ कोई बिश्नोइयों से सीखे। साल में दो बार (फाल्गुन बदी एवं आसोज बदी अमावस) बिश्नोई समाज के लोग 'मुक्ति धाम मुकाम' (गुरु जंभेश्वर का समाधि स्थल) पर एकत्र होकर 'पर्यावरण संरक्षण संकल्प समारोह' का आयोजन करते हैं। बिश्नोई महिलाएं हिरण के नवजात बच्चों को अपनी छाती का दूध पिलाकर पालती हैं। कृतज्ञ राष्ट्र ने बिश्नोई महिलाओं के पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपूर्व योगदान को देखते हुए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) के स्कूल ऑफ एनवायरनमेंटल साईंस स्थित सेमिनार हाल का नाम अमर शहीद अमृता बिश्नोई के नाम पर रखा है। जौहर साहब की यह उपयोगी किताब प्रकृति व पर्यावरण प्रेमियों के लिए बड़े काम की है।

-राजकिशन नैन, रोहतक

सामाजिक हलचल

श्री गुरु जम्भेश्वर कोचिंग सैंटर का शुभारम्भ

हिसार: श्रीमती जसमां देवी पूर्व विधायक, आदमपुर ने नववर्ष के अवसर पर 01 जनवरी, 2016 को प्रात: 10:00 बजे श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार में शुरू किये गये श्री गुरु जम्भेश्वर कोचिंग सेन्टर का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर 31 दिसम्बर, 2015 की रात्रि को गुरु जम्भेश्वर भगवान के विशाल जागरण का आयोजन किया गया। इस जागरण में स्वामी रामानन्द आचार्य, पीठाधीश्वर मुक्तिधाम मुकाम, स्वामी सच्चिदानन्द जी आचार्य, लालासर साथरी और अन्य गायक कलाकार व धर्म प्रचारक गुरु जंभेश्वर भगवान की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। 01 जनवरी को प्रात: 8:00 बजे विशाल यज्ञ व पाहल का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए श्रीमती जसमां देवी ने कहा कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं है। मेहनत करने वाले को इसका फल अवश्य मिलता है। शिक्षा मनुष्य के जीवन को दिशा प्रदान करती है। स्वामी रामानन्द आचार्य ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि अनुशासन में रहकर शिक्षा ग्रहण करेंगे तो हमें सफलता अवश्य मिलेगी। बिश्नोई सभा हिसार के प्रधान सुभाष देहडू ने बताया कि इस कोचिंग सेन्टर में जरूरतमंद विद्यार्थियों को प्रतियोगी परिक्षाओं की कोचिंग दी जायेगी। प्रारम्भिक स्तर पर पटवारी, पुलिस, क्लर्क, बेंकिंग, एस.एस.सी. की कोचिंग दी जायेगी। इस हेतु योग्य शिक्षकों का प्रबन्ध किया गया है। श्री देहडू ने आगे बताया कि विद्यार्थियों की सुविधा हेतु बिश्नोई मन्दिर, हिसार में अध्ययन कक्ष, इन्टरनेट सहित कम्प्यूटर लैब और पुस्तकालय की व्यवस्था की गई है। इस कोचिंग सेन्टर से उन विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा जो बाहर कोचिंग सेन्टरों की भारी भरकम फीस नहीं दे सकते। इस अवसर पर गुरु जम्भेश्वर सेवक दल, हिसार के प्रधान सहदेव कालीराणा, अखिल भारतीय जीवरक्षा बिश्नोई सभा के प्रदेशाध्यक्ष कामरेड रामेश्वर डेलू, बिश्नोई सभा डबवाली के सचिव इन्द्रजीत धारणियां, पूर्व आई.पी.एस. रामसिंह बिश्नोई ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया व इस समाज हित के कार्य की प्रसंशा की। इस अवसर पर बिश्नोई सभा फतेहाबाद के प्रधान भूपसिंह गोदारा, बिश्नोई सभा टोहाना के प्रधान आसाराम लोहमरोड़, बिश्नोई सभा रतिया के प्रधान रामस्वरूप बैनिवाल, बिश्नोई सभा हिसार के कोषाध्यक्ष राजाराम खीचड़, उपाध्यक्ष कृष्ण राहड़, अमरसिंह मांझू, वरिष्ठ समाजसेवी रामस्वरूप जौहर, निहालसिंह जौहर सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मंत्र संचालन डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई ने किया व धन्यवाद ज्ञापन बिश्नोई सभा हिसार के सचिव मनोहरलाल गोदारा ने किया।

–**प्रमोद ऐचरा,** व्यवस्थापक, अमर ज्योति, हिसार

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

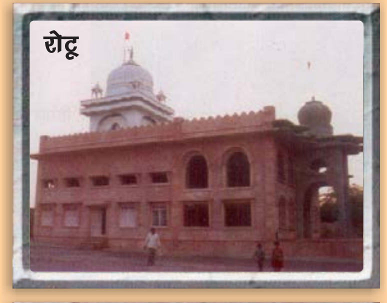

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2072 माघ की अमावस्या

लगेगी : 07.02.2016, रविवार, रात्रि 10.20 बजे

उतरेगी : 08.02.2016, सोमवार, रात्रि 8.08 बजे

विक्रमी सम्वत् 2072 फाल्गुन की अमावस्या

लगेगी : 08.03.2016, मंगलवार, प्रात: 10.33 बजे

उतरेगी : 09.03.2016, बुधवार, प्रात: 7.24 बजे

विक्रमी सम्वत् 2073 चैत्र की अमावस्या

लगेगी : 06.04.2016, बुधवार, रात्रि 8.36 बजे

उतरेगी : 07.04.2016, गुरुवार, सायं 4.35 बजे

फाल्गुन अमावस्या मेला

09.03.2016 बुधवार, मुकाम संभराथल, पीपासर, कांठ, लोहावट, सोनड़ी, मेघावा, भीयांसर

होलिका दहन : 23.3.2016 बुधवार, होलिका पाहल : 24.3.2016 गुरुवार

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा,** (जैसलां वाले)
मो.: 09416407290

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

श्री जम्भवाणी सार भक्त तू निर्मल हृदय धार

- विष्णु सर्वव्यापक है। वह सबके हृदयों में सदैव विराजमान रहता है। वह अपने भिन्न रूपों में ऐसे प्रकट होता है जैसे दूध में पानी और फूलों में पराग, वह चारों योनियों में, सप्त पातालों में, तीनों लोकों में, चौदह भवनों में, नदियों में नीर रूप में, सागर में रत्न रूप में सदैव निरन्तर रूप में विद्यमान रहता है।
- परमतत्त्व सबका सृजनकर्त्ता है। उसका रहस्य नहीं पाया जा सकता है। वह ताप और शीत से परे अथाह, गहन और वर्ण रहित है, उसे केवल अनुभव किया जा सकता है। अमृत के स्वाद की भान्ति उसके स्वरूप का वर्णन वाणी से सम्भव नहीं और न ही सागर में मछली के मार्ग की भान्ति उसका भेद पाया जा सकता है।
- आवागमन से मुक्ति का साधन केवल विष्णु जप है। वह उतना ही शक्तिमान है जितने स्वयं विष्णु अथवा स्वयंभू। विष्णु का जप ही मूल तत्त्व है इससे अमरत्व की उपलब्धि, जरा-मरण से छुटकारा और वैकुण्ठवास मिलता है। इससे मृत्यु उपरान्त क्षण मात्र में मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- निश्चल और एकाग्र वृत्ति वाले व्यक्ति ही अमृत तत्त्व को पाते हैं। यदि हृदय पावन व पवित्र है तो अड़सठ तीर्थ और काबा उसी में है। मनुष्य को सदैव आडम्बरहीन, सादगीपूर्ण एवं सदाचार युक्त जीवन जीना चाहिए।
- हे मोहम्मद खान ! यह संसार नश्वर है, इसमें स्थायी कुछ भी नहीं, पार्थिव वस्तुएं मिथ्या है, इसलिए पार्थिव वस्तुओं का अहंकार नहीं करना चाहिए।
- मानव देह पूर्व जन्मों के पुण्यों से प्राप्त होती है और मानव देह के इस पिंड से ही परमत्त्व को प्राप्त किया जा सकता है। माली जैसे बाड़ी को सींचता है वैसे ही शुद्ध आचरण से शरीर की रक्षा करनी चाहिए।
- सद्गुण के बिना मुक्ति संभव नहीं। गुरु की शरण बिना सुपथ नहीं मिलता और जीवन व्यर्थ जाता है। अत: गुरू कृपा से ही आत्मोपलब्धि संभव है क्योंकि गुरु जीवन मुक्त, कैवल्य ज्ञानी और अनन्तगुण सम्पन्न होता है।
- वाद-विवाद, झूठ, अहंकार, निन्दा, द्वेष भावना, क्रोध, मोह तथा चोरी का सर्वथा त्याग करना चाहिए। बैल, गाय, भेड़-बकरी तथा वन्य प्राणियों आदि निरीह जीवों की हत्या नहीं करनी चाहिए। हरे वृक्ष नहीं काटने चाहिए।
- अपनी कमाई का दसवां हिस्सा दान में अवश्य देना चाहिए। परन्तु दान सदा निष्काम भाव से सुपात्र को ही देना चाहिए। ऐसा दान ही अमृत फल देता है।
- द्विकाल की संध्या, हवन-यज्ञ, तन और मन की पवित्रता, अमावस्या का व्रत, गुरुवाणी को मानना, सहज भाव से रहना, सुपथ पर चलना, सांसारिकता और कीर्ति के लोभ से दूर रहना आदि गुरु जम्भेश्वर के अमृत वचनों का सार है।

DOREXPrinters 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 फरवरी, 2016 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।